॥ श्रीः ॥

कबीरकसौटी

जिसमें

कबीरदासजीकी गूढ कविता, जीवनचरित्र और

सुन्दर ज्ञानोत्पादक साखी वर्णित हैं ।

जिसको

स्वर्गवासी श्रीबाबूलैहनासिंह साहब कबीरपंथी

डिप्टी कान्सरवेटर जंगलातपटियालेने. बहुत

ग्रन्थोंसे निर्णय कर बनाया.

और

बाबू निहालसिंह कबीर पंथी डिप्टी कान्सरवेटर

जंगलात पटियालेके द्वारा प्राप्त कर

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया.

संवत १९८२, शके १८४७.

कल्याण-मुंबई.

सत्यनाम.

भूमिका.

मुद्दतसे मेरा इरादा था कि, साल सम्वत् श्रीकबीरजी साहबके प्रगट होनेका कहींसे मिले, तलाश करते २ लाला माधोराम साहिब पाएलवाले जो दीवानीके शरिश्तेदार थे उनसे यह साखी मिलीः—

दोहा—सम्वत् पन्द्रहसौ पछत्तरा, किया मगहरको गवन ।
माघ शुदी एकादशी, रलो पवनमें पवन ॥

एक रोज मैं पटियालेमें जो दादूपंथियोंका स्थान है उसमें संतोंके दर्शन करनेको चलागया । एक सन्त बहुत उमरके उस मकानमें उतरे हुयेथे उनसे पूँछा अय दयालुजी ! कुछ श्रीकबीरजीके साल संवत्की आपको खबर है कि, कब और कितनी उमरतक काशीमें रहे. उन्होंने कहा कि, हम सीनेबसी सुनते आये हैं कि, श्रीकबीरजी काशीजीमें एकसौ.बीस बरस रहकर मगहरको गये फिरभी जो सन्त आते उनसे यही चर्चा रहती, एक संत दक्षिण देशसे कबीरपंथी वंशकी डोरीके बहुत वृद्ध शरीरके आये उनके पुस्तकमें लिखा हुआ देखा कि ज्येष्ठ शुदी बडसायतको सोमवारके दिन लैहर तालाबमेंसे नीरू

जोलाहा उठाकर लाया इस तरहसे साल संवत् श्रीकबिरजीके काशीजीमें प्रगट होनेका मिला । हिंदूइजम एक अंगरेजीकी किताब है उसमें लिखा है, कबीरजी १४०० सदी ईस्वीके अंतमें थे दूसरी एक डिक्शनरी फारबेसकी है उसमें दर्ज है कि, १५०० पंद्रवीमें थे । तीसरी एक मूरसाहबकी किताब है उसमें लिखा है कि, १९०० सोलहवींके आदिमें थे । चौथी एक बागोबहार है उसकी लुगातमें दर्ज है कि, साढे तीन सौ बरस हुये हैं । तब कबीरजी थे. यह किताब १८५४ ईसवीमें छपी है । इन चारोंसे कबीरजीका सारा हाल मालूम हो सकता है. कबीरजीके नाम

१४००	२
१५००	१००
१९००	१८

अनंत हैं और लीलाभी अनंत हैं कोई पार नहीं पासकता है; जब यह इतनी बातें हासिल हुई तब मैंने इस कबीर कसौटी पुस्तकको वैशाख शुदी १ साल १९४२ में लिखना शुरू किया और माह वदी ८ को पूर्ण हुआ । साल १९४२ कई तवारीखोंसे मिलाकर लिखा है जिस साहिबोंको इससे जियादह मालूम होवे सो इस किताबको देखके बन्देको इत्तिला दें ऐन शुक्र गुजार रहेगा ॥ अब मैं अपने अन्नदाताको आशीस देकर भूमिका खतम करताहूं हमारे श्रीमहाराजा राजेश्वरको गुरु महाराज आनन्द रक्खें । श्रीमहाराजाधिराज राजमान राजेन्द्रसिंह बहा-

दुरको गुरु महाराज चिरंजीव रक्खें तिनकी कृपासे लिख-नेकी फुरसत मिली दासानुदास हरीदास उपनाम लैहणा-सिंह कबीरपंथी पंजोरीचेला गुसाँई श्रीरामदासजी साहिब महंत डेरा बसीवालोंकी भूल चूक मुवाफ करनी जो पढेंगे उन सबको मेरी बन्दगी पहुँचे, जब श्रीकबीरसा-हिबका नूर सत्यलोकसे जो कुछ माजरा था उन्होंने सब देखा और आनकर स्वामी रामानंदजीसे कहा कि कलके दिवस मैंने यह हाल देखा तब स्वामीजीने इष्टानंदसे कहा कि जो ज्योति कल तुमने देखी है थोडेही दिनोंमें उसके विदित होंगे । दूसरे दिन तमाम काशीमें शोर मच गया कि नीरू जोलाहाके घरपर लोग बहुत आते जाते हैं । आगे कथाका आरंभ है इससे सारा हाल मालूम होगा ।

॥ सत्यनाम ॥

अथ

कबीरकसौटी प्रारम्भ ।

साखी—कबीरकसौटी रामकी, झूठा टिके न कोय ॥
रामकसौटी सो सहे, जो मरजीवा होय ॥

सत्यनाम ।

मुनींद्र करुणामय कबीर श्रीकबीर साहिबका काशीजीमें प्रगट होकर अली उपनाम नीरू जोलाहाके घर लहरतालावसे आना। गगन मण्डलसे उतरे, सतगुरु पुरुष कबीर ॥ जल मजधा पौढन कियों, सब पीरनको पीर ॥ कमल कमोदिनि अनंत खिले, तहां करुणामय करतार मिले ॥ कली कली अनंत अली गुंजित गुंजित थकित भये। मोर मराल चकोर तहां सब आन तालावको घेरलये। चौदहसौ पचपन १४५५ साल गिरा चन्द्रवार इक ठाट ठए । जेठ सुदी बरसायतको पूरनमासीतिथि प्रगट भए ॥ टेक ॥ घन गरजे दामिनि

दमके बूंदें बरसें झरलाग गए । लैहर तलाबमें कमल खिले तहां कबीर भान प्रकाश भए ॥ टेक ॥ गवना लेकर नीरू आयो तृषावंत भई तिसकी नारी । जल पियन गई बालक देखा भयभीत भई मनमें भारी ॥ यह बालक यहांपर है कैसा किन डारदिया विधवा क्वारी ॥ नीरू बोले तू सुन नीमा केई बालक होकर बिनशगये मेरो घर खाली है प्यारी ॥ टेक ॥ हरीदासको हीरा हाथ लग्यो तिन शिरको मुकुट कियो भारी ॥ नीमा बोली तुम सुनो मियां मेरो मन डरपत है अति भारी ॥ लोकलाज कुलकान जायबी काशीमें शोर मचे सारी ॥ टेक ॥ सुंदर सूरत मोहनी मूरत कमलनैन छबि अति भारी ॥ इतनी माता जग प्रगट भई तिन ऐसो सुत जन्यो नारी ॥ टेक ॥ मनमगन भये कर बाल लये नारि पुरुष घर आय गए ॥ कुलकी सब नारि जो गान लगी मन मोद आनंदके गानगये ॥ टेक ॥ जब बालक घरमें दीठ पर्चो तब सुरबर सुरबर भइ भारी ॥ यह लड़का कैसा लाये हो मिल पूछन लागीं सब नारी ॥ टेक ॥ बिनजाम्यों लड़का हम मिल्यो याको हम घरमें लाये हैं ॥ हरीदासको प्यारो लागतहै यह सबके मन भाये हैं । काजीको बुलायके कुरानको खुलायके देख्यो जब बीचमें कबीर नाम पाये हैं । अकबर कुबरा किबरिया दिखाई दिया काजी विस्माय दांत ऊंगरी दबाये

है । एक आयो दोय आयो पांच चार औ सात आयो न्यारो न्यारो देख्यो जवहीं तवहीं सव घवराये हैं । यही चारों नाम दिखलाय दिये सवको चुप ह्वैके अपनी किताबोंको छिपायेहैं ।

गरीब-सगल कुरान कबीरहै हरफ लिखे जो लेख ॥ काशीके काजी कहैं गई दीनकी टेक ॥ गरीब-भक्ति मुक्ति ले उतरे मेटन तीनों ताप ॥ मोमनके डेरा लिया कहैं कबीरा बाप ॥ असल निशानी नूरकी, सतगुरु लाये आप ॥ नूर शाफ जगमें भये कहैं अलीसों बाप ॥ काजी लोग कहने लगे कि ये चारों नाम खुदाकेहैं । यह लडका गरीब जुलाहेका है ऐसा बड़ा बुजुर्ग नाम इसका नहीं रक्खा जायगा । फिरकर उन सबने अपनी अपनी किताबोंमें जो देखा तो सिवाय इन चार नामों-के और कई नाम पाये । जिंदा, खिजर, पीरहका, कहने लगे अय अली तू इसको किसी तरहसे मारडाल उनके कहनेसे जब भीतर लेजाकर इरादा मारनेका करने लगा तब कबीरजीने यह शब्द कहा । अब हम अव-गतसों चलेआये । यह माया तो जग भरमाया मेरा भेद नहीं पाये ॥ टेक ॥ ना मेरे जन्म न गर्भ वसेरा बालक ह्वै दिखलाये ॥ काशीपुरी जंगलमें डेरा तहां जुलाहाने पाये ॥ टेक ॥ ना मेरे गगन धरनि पुनि नाहीं दोम ज्ञान अपार ॥ आत्मरूप प्रगट निज जगमें सोतो

नाम हमार ॥ टेक ॥ ना मेरे अस्थि रक्त नहिं चांमा हम हैं शब्दप्रकाशी ॥ देह अपार पार पुरुषोत्तम कहि कबीर अविनाशी ॥

आखिरको हारके कबीरही नाम रक्खा । और घरघरमें चरचा होने लगी कि देखो यह लडका जो नीरू लाया है शब्द बोलताहै । और जब खानेको देतेहैं तो कुछ भी नहीं खाताहै नाभाजी कहतेहैं ॥

पानीते पैदा नहीं, श्वासा नहीं शरीर ॥ अन्नअहार करता नहीं, ताको नाम कबीर ॥ गरीब—अनंत कोटि ब्रह्मांडमें बंदी छोड कहाय । सो तो पुरुष कबीर हैं जननी जना न माय ॥ पार्षअंग ॥ गरीब—चौरासी बंधन कटे कीनी । कलप कबीर । भवन चतुर्दश लोक सब, टूटै यमजंजीर । गरीब—जल थल पृथ्वी गगनमें, बाहर भीतर एक ॥ पूरण ब्रह्म कबीरहै, अवगत पुरुष अलेख ॥ गरीब—सेवक होकर ऊतरे, इस पृथ्वीके माहिं ॥ जीव उधारन जगतगुरु, बारबार बलि जाहिं ॥ अबलाअंग ॥ गरीब—साहिब पुरुष कबीरहैं, योनि परे सो जीव । लखचौरासी भरमहीं, कालजालवटसीव ॥ २३ ॥ गरीब—साहिब पुरुष कबीरने, देह धरो नहिं कोय । शब्दस्वरूपी रूप है, घट-घट बोलै सोय ॥ २४ ॥ अनंत कोटि अवतार है, मायाके गोविंद । करताहै ये ऊतरे, फेर परे यम फंद ॥ २५ ॥

त्रैलोकीका राज्य है, ब्रह्मा विष्णु महेश । ऊंचा धाम कबीरका, बानी बिरह बिदेश ॥ नीरूके घरपर उसी रोजसे लोगोंका हुजूम होने लगा । संत लोग सुन २ कर आने लगे, जो देखैं सो कहैं कि यह तो कोई नूरी जिस्म है । मगर जो लोग कम अक्क और अज्ञानी थे वे हँसते और निंदा करतेथे ॥ पार्ष अंग ॥ ४१० ॥ पांचबरसके जब भये, काशी माँझ कबीर । गरीबदास अजब कला, ज्ञान ध्यान गुणसीर ॥

जब बालकोंमें खेलनेको जाते तो राम राम कहते कभी हरिहरि बोलते । तब जो कोई मुसल्मान इनकी बातको सुनता तो यह कहता कि तू बडा काफिर होगा उसको यह जवाब देते कि जो किसीको नाहक मारताहै और झूठा बेष बनाकर दुनियाको ठगताहै और नशा पीताहै या खाताहै या पराया माल मारताहै या अपना घात करता है सो काफर है और जो रास्तामें लूटे सो काफर जीतसू छूटे ॥

गलाकाट बिसमिल करैं, ते काफर बेबूझ ॥ औरनको काफर कहैं, अपना कुफर न सूझ ॥ १ ॥ एक दिन बालकोंमें खेलतेथे माथेमें तिलक और गलेमें जनेऊ पहिरे हुएथे । ब्राह्मण लोगोंने इस हालतको देखके कहा कि यह तेरा धर्म नहीं है तैंने वैष्णवरूप कियाहै विष्णु २ और नारायण २ और गोविंद २ और मुकुंद २ कहता

है । यह हमारा धर्म है इसपर कबीरजीने यह शब्द कहा ॥ शब्द ॥ मेरी जिह्वा विष्णु नैना नारायण हिरदै बसैं गोविंदा । यमद्वारे जब पूंछि सब बरे तब क्या कारि समुकुंदा ॥ टेक ॥ हम घर सूत तनैं नित ताना कंठ जनेउ तुम्हारे । तुम नित बांचत गीता गायत्री गोविंद हृदय हमारे ॥ टेक ॥ हम गोरू तुम ग्वाल गुसाँई जन्म जन्म रखवारे । कबहीन वारसों पारचराये ॥ तुम कैसे खसम हमारे ॥ टेक ॥ तुम ब्राह्मण मैं काशीको जुलाहा बूझो मेरा ज्ञाना ॥ तुम निज खोजत भूपति राजे हरीसंग मोर ध्याना ॥

हिन्दू और मुसलमान जब दोनों मजहबके लोक आन आनकर बहस करने लगे और कहने लगे कि तू निगुरा है । तब कबीरजी एक रोज बडे सबेरे उठकर गंगाजीकी पैडियों पर जाके पडगये । थोडी देरके पीछे स्वामी रामानंदजी स्नान करनेको उसी घाटपर आये उनके पडबेकी ठोकर जब कबीरजीके शिरपर लगी तब बापरे २ पुकार कर रोने लगे स्वामीजीने कहा राम २ कहो उसी वक्त ऐसे जोरसे राम २ रटने लगे कि जिस तरफसे आते थे तमाम लोग जाग गये । और कहने लगे कि नीरूके लडकेको क्या हुआ है । मुसलमान होके राम राम कहता है ॥ उसी तरहसे घरपर आये । जब माई नीमाने देखा तो कहा कि तुझको किसने बौराया कहा

हम रामानंदजीके चेलेहैं जब यह खबर और लोगोंने सुनी तो बडा ताज्जुब करने लगे और कहनेलगे कि इसकी सुन्नत कीजावे तो बेहत्तर हो ब्राह्मणोंकी भी यही राय हुई ॥ सबने इत्तफाक करके पकडलिया और बांधके सुन्नत करने लगे तब कबीरजीने यह शब्द कहा।

शब्द ॥ जोर जुलम तुम करतहो मैं न बदोंगा भाई। जो खुदा तोहे तुरक करता है तो आपे कटी न आई ॥ सुन्नत कराय तुरक जो होवे औरतसूं क्या कहिये ॥ अर्ध शरीरी नारि बखानों ताते हिन्दू रहिये ॥ घाल जनेऊ ब्राह्मण होवे तो औरतकूं क्या पहराया। वह जन्मकी शूद्री परशे तुम पांडे क्यों खाया ॥ हिन्दू मुसलमानकी एक राह है सतगुरु मोहिं बताई। कहैं कबीर सुनोहो संतो राम न कह्यो खुदाई ॥ इस शब्दको सुनके सब हिन्दू मुसलमान जमा होकर स्वामी रामानंदजीके पास फर्यादी गये जाकर कहने लगे कि तुमने एक मुसलमान जोलाहाके लडकेको चेला किया है। स्वामीजीने कहा उसको पकडलावो ॥ स्वामीजीकी आज्ञा पातेही लोग पकडलाये। जब रूबरू आये तब स्वामीजीने आडा परदा डलवाकर पूंछा कि क्योंरे लडके हमने तुझको कब चेला कियाहै ? कबीरजीने जवाब दिया। स्वामीजी और कोई मंत्र कानमें देतेहैं आपने तो रामनाम शिर ठोककर दियाहै ॥ फिर स्वामीजीको वह बात चित्त

आई ॥ तो परदा दूर करके छातीसों लगाकर कहा कि इसके चेला होनेमें कुछ सन्देह नहीं है ॥ सब लोक खिसियाने होकर चुपचाप अपने २ घरको चले आये ॥ कबीर भी नीरूके घरपर आनकर कपडेका काम करने लगे ॥ जब कोई संत आते तो चौका लगवाते और कोरे बरतन मँगाकर भोजन तैयार करवाकर संतोंकी टहलमें मश-गूल रहते माई नीमा नाराज होकर डांटती और कहती कि यह हमारे कुलकी रीति नहीं है जो तू करता है ॥ धर्मदासजीने माईकी ओरसे एक शब्द कहाहै ॥

शब्द ॥ हमारे कुल कौने राम कह्यो ॥ टेक ॥ सुनो दिवनियां सुनो जिठनियां अचरज एक भयो । सात सूत-या मुंडिया खोये मुंडियां क्यों ना मोरा ॥ टेक ॥ मांय तुरकनी बाप जोलाहा बेटा भक्त भये ॥ जबकी माला लई न पूते तबसे सुख न भये ॥ नित उठ कोरी गागर मांगत लीपत जन्म गये ॥ टेक ॥ पंचज शत मुंडिया और सुबे कबीरा कहांसे भये ॥ रोय रोय कहति कबीरकी माता बेटा मर न गये ॥ टेक ॥ हँसिहँसिकहतकबीरकीभैनाभैयाअमर भये ॥ कहैंही धर्मदास सुनो भाइसाधो कबीरा साहिब भये । कबीरजीका अब हर रोज रामानन्द स्वामीके यहां आना जाना होगया । एक दिन स्वामीजी स्नान करके अन्दर परदा डलवाकर मानसिक पूजा करने लगे ॥ पूजा करते करते ठाकुरजीको स्नान कराकर वस्त्र और मुकुट

पहरा दिये फूल माल पहराना भूलगये ॥ सोचतेथे कि अगर मुकुट उतारकर पहरावें - तो दुबारा स्नान कराना पडेगा ॥ इसी सोचमें गडगाप हो रहे थे इतनेमें कबीरजीने डचोढीके बाहरसे आवाज देकरकहा ॥ किहेस्वामीजीघुंडी खोलकर पहरादोतब स्वामीजीने जाना कियहतोपूर्णब्रह्म है जो अंतर्गतकी सब जानताहै ॥ डचोढी परदा दूर करके आसन दिया और अंकमाल किया ॥ स्वमी घुंडीखोलके तब माला गलडार । गरीबदास इस भजनकोजानतहै कर-तार ॥ डचोढीपरदा दूरकर लीया अंगलगाय ॥ गरीबदास गुजरी बहुत बदनै बदनामिलाय ॥ मनकीपूजा तुमलखी मुकुट मालपरवेश ॥ गरीबदास गतिको लखै कौन बरन कौन भेश ॥

आगे कथा सर्वाजीत पंडितकी बहुत हैं मगर थोडासा प्रसंग लिखाहै ॥ सर्वाजीत जब अपनी माके उपदेशसे काशीजीमें आये तो उसकेसाथपुस्तक बैलोंपर लदेहुयेथे ।

नीरू जोलाहाकी लडकी कुवेंपर जल भर रहीथी ॥ पंडितजीने उससे पूछा कि कबीरका घरकहां है लडकीने जवाब दिया कबीरका घर शिखर है जहांसलैहली गैल पांव न टिकै पिपीलिका पंडितलादेबैला । पंडितने जाना कि यह लडकी जरूर कबीरको जानती होगी ॥ उसने एक पानीका लोटा भरकर उस लडकीके पास दिया

और कहाकि इसको कबीरके आगे रखना। जो जवाब वे दें सो हमसे कहना जब उस लडकीने वह बर्तन कबीर-जीके आगे रख दिया उन्होंने एकसूई उस जलमें डाल दी और लडकीसे कहा कि इसको लेजा लडकी उस बरतनको पंडितजीके पास लाई॥ उसने पूछा कि क्या कहा उसनेजो देखासो कहा॥ पंडितजी सुनकर विस्मित भये काशीके सब पंडित जमा होकर स्वामी रामानंद-जीके पास जाकर कहने लगे कि एक पंडित सर्वाजीत काशीमें आया है॥ कोई पंडित उसके साथ मुकाबला करने योग्य नहीं है क्या किया जावे स्वामीजीने कहा कि जो लडका तुमको मिले उसको हमारे पास लावो॥ वे लडकेकी तलाशमें जब बाहरको घरसे निकले तब उनको कबीरजी मिले उसको स्वामीजीके पास ले गये॥ स्वामीजीने कहा यह तो अजीत पुरुष है इनको कोई नहीं जीत सकेगा जब अगले दिन सभा जमी और गद्दीपर तैयारी सब अच्छी तरहसे हो चुकी तब सब पंडित लोग आकर जमा हुए॥ कबीरभी आये और सबको बंदगी की॥ सर्वाजीतने कहा कि जो जो तुम बोलना चाहतेहो सो कहो॥ सबोंने एक मुख होकर कहा कि आपके साथ कबीर बोलेगा उसने कहा वह कौनहै कहा कि कबीर जोलाहा है। उसने जवाब दिया कि जोलाहा कैसा तब कबीरजीने यह शब्द कहा—

शब्द ॥ अस जोलहा काहु मर्म न जाना । जिन जग आय पसारित ताना ॥ टेक ॥ धरणि अकाश दोऊ गाड खनाया । चांद सूरज दोऊ नार बनाया ॥ सहसरताले पूरिन पूरी । अजहूं बिनें काठिन है दूरी ॥ कहहिं कबीर कर्म सों जोरी । सूतक सूत पिने भलकोरी ॥ ऐसे शब्द और भी बहुत हैं ॥ जब सर्वाजित हारे और कबीरजी जीते तब कबीरजीको पंडितने प्रणाम किया और यह कहा कि मुझको अपना शिष्य करो ॥ फिर कबीरजी उसको स्वामीजीके पास लेगए ॥ उनका शिष्य भया ॥ तब काशीके पंडितोंने कबीरजीको एक अगर और दिया ॥ अब काशीजीमें कबीरजीके तीन अगरका यज्ञोपवीत भया इति ॥ एकदिन कई संत आए कबीरजीको कहने लगे कि हे कबीरजी ! आपका घर कसाइयोंमें है जहां दशकसाई वहां एक कबीरकी क्या बसाई ॥ साखी ॥ कबीर तुम्हारा झोपडा गल कटयोंके पास ॥ करैंगे सो भरैंगे तुम क्यों भये उदास ॥ कपडा बुननेके काममें लगे रहते जो दिन भरमें पैदा करते आधा पुण्य करते बाकी आधा जो बचता सो उन घरवालोंको देते जहां रहते थे ॥ एक दिन मण्डीमें कपडा बेचने गये ॥ कबीरजी तो पांच टके कहते लोग तीन कहते ॥ तीन दिन हुए कोई तीन टकेसे अधिक न देवे एक दलाल आया उसने इनसे लेकर थोडीसी

दूर जाकर उसका मोल बारह टके किया लेनेवालेने सात दिये ॥ सो कबीरजीको दिये ॥ कबीरजीने पांच टके लेकर यह साखी कही ॥

साखी-सांच कहै तो मारिहो, झूठे जग पतिआय ॥ पांच टकेकी दोवटी, सात टकाको जाय ॥ एक दिन फिर मंडीमें थान बेचने गये ॥ इतनेमें एक संत वस्त्रहीन वहांपर आया और कहा कि हे भक्तजी ! वस्त्र चाहता हूं उसको कबीरजी आधा थान देने लगे तो उसने कहा कि आधेसे मेरा काम नहीं होता है ॥ तब पूरा थान दे दिया आप घर पर नहीं गये घरके लोग तीन दिन तक रास्ता देखकर चुप होगये ॥ कोई बनजारा बैल भरकर घरपर लाया माईने शोर मचाया मगर उसने माईकी कुछ बात न सुनी घरमें अनाज गेरके चला गया ॥ कई आदमी तलाश करके कबीरजीको घरपर लाये जब घर-पर आये सब अनाज जो जमाथा सो गरीबों मोहताजों-को खवा दिया ॥ जब यह खबर ब्राह्मणोंने सुनी तो क-बीरजीके यहां आकर गालियां देदेकर कहने लगे यातो कुछ उसमेंसे जो माल तुझको मुफ्तका मिला है हमको दे नहीं तो हम तुझको नगरसे बाहिर निकाल देंगे ॥

क्या मैं घर काहूको फोरचो । मानुष मारचो क्या धन चोरचो ॥ क्या मैं बाट पराई मारी । क्या मैं तकी पराई नारी ॥ ऐसा क्या कसूर मुझसे हुआ है जो नगरको तजूं ॥

खैर अब तुम यहांपर आएहो यहां ठहरो मैं बजारमें जाता हूँ जो कुछ मिलेगा सो तुमको दूंगा। वहांसे उठकर बाहिरको चले गये ॥ जाकर राग गौरी गाने लगे कि फिर दुबारा पहलेकी तरहसे कोई बनजारा बहुतसा माल लाया कबीरजीको ढूँढकर घरमें लाए ॥ ब्राह्मणों और मोहताजोंको जो कुछ आया था सब दे दिया ॥ ब्राह्मण धन्य धन्य करते अपने घरको गये ॥ मगर बहुतसे मतिहीन कुबुद्धि और क्रूर कहने लगे कि यह जुलाहा राजावोंसे और कहूंसे धन लाया है चलकर राजासे कहैं कि यह दंडके योग्य है किसी तरहसे चैन नहीं थी ॥ हर तरहसे आन २ कर दिक्क करते मगर हारके जाते कोई पार न पाते थे कथा ब्राह्मणोंकी बहुत है मगर यहां थोडासा हाल लिखा है ॥ लोग जो कबीरजीके घरमें लोई कहते हैं तिसका हाल आगे लिखते हैं।

अथ लोईकी कथा।

लोई—प्रकाशको कहते हैं। नूर—आब ॥ मांड-तुरानी ॥ पान—इज्जत ॥ कंमल-कमली ॥ सभा—पंचायत ॥ कम्पनी नाम स्त्री वाचक है ॥ जब कबीरजी तीस वर्षकी उमरके हुए तब एक रोज गंगाजीके किनारे पर शैर करते हुए एक जंगलमें पहुँचे वहांपर एक वनखंडी बैरागीकी कुटी थी। उस स्थानपर जाकर बैठ गये और थोडी देरके बाद एक

लडकी लगभग बीस बर्षकी बयसमें थी जिसका लोई नाम था सो वहाँपर आई कबीरजीको पूछने लगी कि आप कौन हो ?

जवाब-कबीर हैं। जाति क्या है ? ज०-कबीर हैं। भेष क्या है ज०-कबीर हैं बहुतसे संत यहांपर आते जाते रहै हैं कोई ऐसा भेष नाम जाति नहीं सुना है ॥ कबीरजीनें कहा तू सच कहतीहै ये तीनों सबसे न्यारे हैं इतनेमें वहां कइएक संत और आकर बैठगये ॥ थोडी देरके बाद उस लडकीने बहुतसा दूध वहांपर लाकर रक्खा उन संतोंने उसको सात पनवाडोंमें बांटा पांच तो संतोंने लिये एक लोईको दिया सातवां कबीरजीको दिया ॥ उन्होंने लेकर धरती पर रक्खा ॥ जब सब संत अपना अपना पीचुके तब उन्होंने कबीरजीसे कहा कि आपनें क्यों नहीं पियाहै ? कबीरजीने जवाब दिया कि, एक संत गंगापारसे आतेहैं उनको देंगे ॥ तब लोईने कहा हे साहिब ! आप अपना बांटा पीलें । उस संतके वास्ते और बहुतेरा है । तब कबीरजीने कहा हे लडकी ! हम शब्द आहारी हैं ॥ इतनेमें वह संत जिसका जिक्र था आन पहुँचा वह पनवाडा उसको दिया फिर वे संत लोईसे पूछने लगे कि हे लड़की ! तू इस जंगली बीयाबानमें किस तरह रहतीहै ॥ तेरे माता और पिता कहां रहतेहैं ॥

लोईने जवाब दिया कि मेरे माता पिता कोई नहीं है जो संत यहां रहतेथे, थोडे अरसेसे उनका परलोक होगयाहै, उन्होंने मुझको पालाथा अब मैं अकेली यहां रहतीहूँ ॥ वे संत कौनथे और किसतरहसे तू उनके पास आई ? अब लोईने अपनी व्यथा कहनी शुरूअ की जो संत यहां रहतेथे वे वैरागी वनखंडी दूधाधारी थे ॥ जो कोई संत यहांपर उनके पास आते थे और मेरे आनेका हाल उनसे पूछतेथे तो बाबाजी उनके पास यहहालयों कहतेथे एक रोज हम गंगाजीके तीर पर स्नान करने लगे इतनेमें एक तुला कमलीमें लिपटाहुआ हमारे पास आनकर बदनसे लगा तब हमनेजो इसको खोला तो उसमेंसे एक लडकी मिली हमने इस लडकीको दूधकी बाती देदेकर पालाहै ऊन वस्त्रोंमें मिलनेके सबबसे नाम लोई रक्खा है । यह कथा जो महाराज स्वामीजी संतोंको सुनाया करतेथे सो मैंने तुमको सब सुनादीहै ॥ यह कथा लोईके मुखसे संत सुनकर चुपहुए, फिरलोई कबीरजीकी गंभीरता देखके कहने लगी हे स्वामीजी ! मुझको कुछ ऐसा उपदेश करो जिसमें मेरे मनको शांति होवे । कबीरजीने लडकीका साफ दिल देखकर यह उपदेशकिया सत्यनामका जप और संतोंकी टहल मनलगाकर करती रहो । जबयह वचन महाराजके मुखारविन्दसे सुना तो सुनतेहीजग-

त्की वासना दिलसे दूर होगई जो डेराथा सो सब उन संतोंके हवाले किया कबीरजीके साथ काशीमें आकर संतोंकी टहल बमूजिब फरमाने कबीरजीके हर रोज करनेलगी ॥ जो काम कपडेका कबीरजी करते थे सो उसनेभी सीख लिया ॥ नीमामाई यह जानतीथी कि लडका दुलहिन लायाहै ॥ जब बहुत मुद्दत हुई तो कहने लगी कि नाहक व्याह कराकर दुलहिन लायाहै कोई भी बात दुनियादारीकी नजर नहीं आतीहै । जब माई-की समझ ऐसीथी तो लोगोंका क्या दोष है ॥ जो शब्दोंमें कबीरजीने कहाहै कि, कहै कबीर सुनोरे लोई । यारीलोई यह कुल सभाको कहाहै या अपनी बुद्धिको या संसारको ॥ लोईका होना कबीरजीके पास लोगोंने बहुत तरहसे अपने अपने प्रेम और बेखबरीसे लिखाहै असल हाल किसी बिरलेको मालूम है जिसने बहुतसी वाणी कबीरजीकी देखी होंगी ॥ बहुत वक्त माया स्त्रीरूप होकर छलने आई कबीरजीने मायाके ऊपर बहुत शब्द कहेहैं ॥ कबीरजी तो बालब्रह्मचारी हैं नारीके त्यागनेके बहुत शब्द कहेहैं ॥ थोडेसे प्रमाणके वास्ते लिखतेहैं ॥

साखी ॥ कारी नागन विष भरी, बिषलै बैठी हाट । पाले परी कबीरके, कीन्ही बारह बाट ॥ साखी ॥ कबीर नारी निरख न देखिये, निरख न कीजै दौर । देखतही ते विष

चढे, मन आवे कछु और ॥ साखी ॥ कबीर जो कबहुंक देखिये, बीर बहिनके भाय ॥ आठ पहर अलगा रहे, ताको काल न खाय ॥ साखी ॥ भग भोगैं भग ऊपजैं भगते बचा न कोय। कहे कबीर भगते बचा, भगन कहावै सोय ॥ कबीर-गाय भैंस घोडी गधी, नारि नाम है तास। जा मन्दिरमें ये बसैं, तहां न कीजै वास ॥ कबीर कामी क्रोधी लालची, इनतें भक्ति न होय। भक्ति करे कोइ शूरमा, जात वरणकुल खोय ॥

कामके अंगमें।

कामके अंगमें पछत्तर साखी कही हैं ॥ जिसका रज वीर्यका शरीर और माता पितासे पैदा और बिंदुसे संतान वह कभी सतगुरु पदको प्राप्त होसक्ताहै ॥ जो चार दागसे रहितहै सो सत्तगुरु है ॥ प्रमाणके वास्ते वाणी गरीबदासजीकीमेंसे साखी लिखतेहैं ॥

गरीब-देहीको सतगुरु कहै, यह सब अंदरज्ञान।
चार दाग आया नहीं, तिसको सतगुरु जान ॥

अथ कुदरतसे कमालका होना लिखते हैं।

बहुतसे लोगोंने कमालजीको कबीरजीका पुत्र अपने प्रेम और वाणसि बेखबरी होनेके सबबसे लिखाहै असली हाल जो शब्दोंके देखनेसे और संतोंके मिलनेसे मालूम हुआहै सो नीचे लिखतेहैं, एक दिन कबीरजी

और शेखतकी गंगाजीके तटपर शैर कर रहेथे इत्तिफा-
कन एक मुरदा लडका दो तीन महीनेका शेखने देखा
तो कबीरजीसे कहा कि यह लडका वडा खूबसूरतहै
मगर बेजान है तब कबीरजीने कहा किस द्वारसे गयाहै
और कहां है शेखने कहा मुझको इतनी खवर नहीं है
आप बतावें, तब कबीरजीने कहा कि न कहीं गया न
आया जहांका तहां मौजूद है ॥ फिर शेखने अर्ज की
अगर मोजूद है तो बुलाओ तब कबीरजीने लडकेके का-
नमें शब्द कहा लडका रोनेलगा तब तकीने कहा आपने
कमाल किया ॥ कबीरजीने कहा यहतो खुद बखुद कमा-
ल है लोईको लाकर दिया उसके स्तनोंसे दूध उतर आया
लोईको माँके समान जानताथा ॥ लोईकी गोदमें बाल-
क देखके अनजान लोग कबीरजीको गृहस्थ जानतेथे ।
यह हाल जिनको मालूम नहीं है अब तक यही जानते
हैं कि कबीरजी गृहस्थ थे ॥ कमालके रेखते बहुत हैं
थोडेसे लिखते हैं ॥

रेखता ।

तुही हूर तुहीं नूर तुहीं है पीर पैगंबर ॥ तूहीं सिंह तुहीं
शाह हंस तूहीं है सरवर ॥ मच्छ कच्छ जल थल तुहीं ॥
तेरा अन्त न पाया कहीं ॥ बलबल कमाल इस खया-
लको एक नाम साहिब तुहीं ॥ १ ॥ मनीको मारके धनी-

को याद कर सदा तो यह रंग नहीं रहता ॥ कहै कमाल कबीरका बालका धोयले हाथ दरवाय बहता ॥

कमालीकी कथा ।

एक रोज किसीके यहां लडकी मरगई ॥ उस मंजलमें कबीरजी भी साथ गये ॥ लडकीवालेसे कहा कि यह मुर्दा लडकी हमको दो उन्होंने न दी जब लडकीकी मांने सुना तो कहा ॥ यह मेरी लडकी पिर कबीर जिन्होंने कमालको मुरदेसे जिंदा किया है उनके पास भेजदो । उस औरतने वरजिद होकर वह मुरदा लडकी कबीरजीके पास भेजदी कबीरजीने लडकीको शब्दसे चैतन्य किया ॥ और नाम कमाली रक्खा ॥ लोईको दी उसकी छातीसे दूध उत्तर आया जैसे कमाल साहिबके वास्ते उतरा था ।

कमाल और कमालीको लोईने पाला वेभी कपडेका काम करतेथे ॥ और लोईको मांके समान जानतेथे ॥ कबीरजीको तीनों स्वामीजी कहकर पुकारतेथे ॥ अन जान लोग, जिनको यह भेद मालूम नहीं था सो कबीरजीको गृहस्थ कहते थे और अबभी बहुतसे लोग यही कहते हैं कि कबीरजी घरबारी थे ॥

सा॰—कबीर हम घर जालियां, अपना लिया मुण्डाहाथ ।
अब घर जाकू नासका, जो चलै हमारे साथ ॥

बहुतसे लोगोंने अपने मनसे झूठी उत्थानिका उठाके शब्दोंके अर्थोंको कुछका कुछ कर दिया है। कहीं २ मैंने यह लिखाहुआ देखा है कि कबीरजी लोईको कांधे पर उठाके बारिशमें बनियेकी दूकानपर ले गये और कमालीके साथ चोरकी जान बचानेको चोर सुलाया यह सब कपोल वाद हैं, कहीं कबीरजीके शब्दोंमें इसका जिक्रभी नहीं है ॥ जिस जिसने इसको बेखबरीसे लिखाहै सो सब झूठ समझना चाहिये ॥ भक्तमालमें लिखाहै कि पीपाजी जो कबीरजीके छोटे भाई थे वे अपनी सीता नाम्नी स्त्रीको रातके समय अपने कांधेपर उठाकर लेगये ॥ और गुसाईं गरीबदासजीकी वाणीमें लिखा । कि, तुलसी भक्तने चोरकी जान बचानेको पुत्रीके ढिग सुलाया था ॥ जब कमाली बीस बरसकी उमरमें हुई तब ऐसा इत्तफाक हुआ एक रोज कुएँ पर जल भरतीथी इतनेमें एक पंडित हरदेव नाम वहां आया ॥ और कमालीसे कहने लगा हे सुंदरी ! जल पिलादे उसने पिला दिया जब उसकी प्यास बुझी तब पूछने लगा कि तू किसकी कन्या है, उसने कहा जुलाहाकी तब पंडितजी विस्मित भये और खफा होकर कहने लगे कि तैंने मुझको जातिसे हीन कियाहै ॥ कमालीने कहा मैं कुछ नहीं जानतीहूँ तुम स्वामीजीके पास चेला तब फिर दोनों कबीर-

जीके पास आये पंडितजीने अभी हाल कहना शुरूअ किया ही था कि कबीरजी सब माजरा जानगए और गौरीराग गाने लगे ॥

शब्द ॥ ७१ ॥ राग ॥

पंडित बूझ पियो तुम पानी। तोहे छूत कहां लपटानी ॥ टेक ॥ मच्छ कच्छ या जलमें व्याने रक्त जेर जल भरिया ॥ खार पलास सभी बहि आये पशु पानीमें सरिया ॥१॥ छपनकोटि यादव संहारे परे कालकी घाटी ॥ पैंड पैंड पैगम्बर गाडे तिनकी साडि भै माटी ॥ ॥ २ ॥ ता माटीका भाँडा घडिया तामें भरिया पानी ॥ सो पांडे तुम पानी पीया सूग कहांते आनी ॥ ३ ॥ हाड झरे झर मांस गरे गर दूध तहांते आयो ॥ सो पांडे तुम पीवन बैठे काहे दोष लगायो ॥ ४ ॥ बुनो जोलाहे तनो तनो जोलाहे पान जोलाहें लाई। पांचों कपडे उतार धरे तुम धोतीमें सिध पाई ॥ ५ ॥ जो माखी विष्ठाको भखती भखती दुस्ती घोरा। सो माखी उड पातल बैठी ताको करो नबेरा ॥ ६ ॥ कहैं कबीर सुनो हो पांडे छांडो मनके भर्मा। वेद कितेब दोऊ महिडारो रहो रामकी शरना ॥

पंडितने जब यह शब्द सुना तो निश्चय किया कि, कबीरजी साहब पूर्णब्रह्म हैं चरणोंपर गिरके कहने लगा

हे स्वामीजी ! आजका दिन बहुतही उत्तम और पवित्र है जो मुझ ऐसे अज्ञानीको आपके दर्शन हुए ॥ अब मुझको कुछ उपदेश किया ॥ और कमालीके साथ उसका गंधर्व विवाह करदिया ॥

जो सन्तान उनसे उत्पत्ति हुई उनको कबीरवंश कहते हैं ॥ पूरा २ हाल कबीरपंथी और कबीरवंशियोंका कथाके अन्तसे कुछ थोडासा पहले लिखाजावेगा ॥

सिकन्दर लोदीका काशीमें आना और वेश्याका कबीरजीका लेजाना और पंडेका पांव बुझाना और बावन लाख वाणीका डुबाना और लोदीके दरबारमें जाकर लोगोंका बहसहोना ॥ और चेलोंका दिल फिरना थोडेसे लोगोंका कायम रहना ॥ और वीरसिंह बघेला रानाका शिष्य होना जलमें डुबाना आगमें जलाना हाथीके आगे गठडी बांधके गेरना सिंहरूप बादशाहको दिखलाई देना काजी और पंडितोंका हारना लिखते हैं—

१५४५ के सालमें सिकन्दरलोदी वहलोलका बेटा इब्राहीमका बाप काशीमें आया, उस समय बहुतसे राजे काशी सेवनको आये हुए थे और बीरसिंह बघेला जौनपुरसे आया हुआथा, कबीरजीसे बहुत प्रेम रखता था जब कबीरजी जाते तब गद्दी छोडकर खडा होजाता था । फाल्गुन सुदी पूर्णमासीको कबीरजी एक बगलमें तो रैदास भक्तको और दूसरीमें

वेश्या, हाथमें चरणामृतका शीशा लेकर बाजारके रास्तेसे बादशाहके दरबारकी ओर चले हुएथे. रास्तेमें लोग राख और मिट्टी कबीरजीके ऊपर फेंकने लगे और कहने लगे अराराश ॥ झरारा सुनो हमरी कबीर। जब यह हालत कबीरजीकी लोगोंने देखी, तब जो वाणी बावन लाखके बावन ग्रंथ रचे हुएथे सो सब गंगाजीमें लेजाकर डुबादिये ॥ जब यह खबर स्वामीजीने सुनी तो बडा अफसोस किया ॥ अच्छे लोग सब सुनकर विस्मित हुए उसी रूपसे दरबारमें गये। तब बीरसिंहके पास जाकर खडे हुये तो राजाका दिल कबीरजीकी तरफसे फिरगया ॥ कुछ उनकी तरफको मुतवज्जह नहीं हुआ ॥ तमाम दरबारके लोग कुछ २ नालायक बातें कबीरजीको कहने लगे और बादशाहभी इस हरकतसे नाखुश हुये ॥ मगर होरीका दिन समझके चुपरहे ॥ कबीरजी हरि हरि करके बैठे उसी वख्त हडबडाकर राम राम कहकर खडे होकर चरणामृतका शीशा अपने चरणोंपर उलटाकर उलटे फिरे तब बीरसिंह बघेलाराणाने कहा कि, यह क्या किया है ॥ रैदासने कहा कि, जगन्नाथके पंडेका पांव अटका उतारते वख्त जला है ॥ सो बुझाया है इस बातको सुनके किसीने विश्वास नहीं किया ॥ उसी समय पत्री एक तो बादशाहके यहांसे, दूसरी राणाकी-

रसिंहके यहांसे लिखीगई ॥ बीरसिंह बघेला राणाने कहा क्या यह बात सच होगी ? तब एक संत जो उस जगह बैठेथे बोले " छाके अनछाकेही डोलै, दास कबीर मिथ्या नहीं बोलैं " सांडनी सवार तब पुरीमें पहुँचे तो उन्होंने पंडोंसे दरयाफ्त किया किसी पंडेका पांव जला है ॥ उन्होंने कहा हाँ जला है वहांसे उत्तर लेकर जब लौटे तब राजाको इत्तला हुई कि जरूर पंडेका पां-व कबीरजीने बरफके पानीके साथ शर्द किया ॥ रा-जाको परतीत भई रानीको संग लेकर कबीरजीकी कुटीपर पहुँचके शिष्य भया सारा कुटुंब चरणोंमें प-डा ॥ कबीरजीने सत्यनामका उपदेश कर राजाको बिदा किया. कबीरजीकी और राजा रानीकी कथा बहुत है वह कबीरसागरमें मिलेगी । दूतने शाहको जब कुल हाल सुनाया तो बादशाहने सुनके बडा ताज्जुब किया ॥ तब शाहके पीर शेखतकीने कहा कि, उसके आगे यह तो कुछभी बात नहीं है ॥ उसने एक लडका और एक लडकीको मुरदेसे जिंदा किया और लोई जो एक बंध्या है उसकी छातीसे दूध उताराहै ॥ और एक २ दिनमें कई २ रूप बनाता है दावा खोदाईका करता है उसको वह सजा होनी चाहिये जो मनसूर और शमशतबरेजको हुईथी ॥ इतनेमें बहुतसे लोग मय भाई नीमाके हिंदू मुसलमान नालिशी हुए ॥ दिनमें मशाल

बारके माताने बादशाहके आगे फरयाद की ॥ तेरे राज्यमें अंधेर है कबीर मुसलमान होकर कंठी तिलक लगाता है ॥ सबने कहा यह बात बहुतही विपरीत है ॥ बादशाहने बहुतसी नालिशें जब सुनीं तो क्रोधित होके कबीरजीके पकडनेको अहदी भेजे । फजरके गएहुये कबीरको शामके वख्त दरबारमें लाये ॥ कबीर आनकर चुपचाप खडे होगये ॥ जब काजीने कहा अरे काफर ! सलाम क्यों नहीं करता ॥

दोहा–कबीर तेई पीर हैं, जे जानें परपीर ॥
जे परपीर न जानहीं, ते काफर बेपीर ॥

मुझको सलाम करना नहीं आता है । बादशाहने कहा कि तुमको फजरके वख्त बुलाया था अब तुम शामके वख्त आये इसका क्या सबब है ? कबीरजीने जवाब दिया कि, एक तमाशा देखताथा ॥ शाहने कहा ऐसा क्या तमाशा था जो हुक्म अदूल करके उसको देखने लगा कबीरजीने कहा एक ऐसा तंग रास्ताथा जैसा सुईका नाका उसमें कई हजार ऊंटोंकी कतार जाती देखी, तब बादशाहने कहा कैसी झूठी बात बोलताहै ॥ कबीर झूठ नहीं बोलिये जबलग पार बसाय । ना जानों क्या होयगा तिलके चौथे भाय ॥ कबीर बूँद समानी समुद्रमें जानता है सब कोय ॥ समुद्र समान बून्दमें बूझे विरला कोय ॥ ऊपरकी दोऊ गई हियकी गई

हिराय ॥ कहैं कबीर जाकी चारों गई तासों कहावसाय ॥

शाहने कहा हमको कैसे जानपडे ॥ तब कबीरजीने कहा ऐ शाह ! तू देख जमीन और आकाशकी दूरी ॥ और चांद सूर्यकी इतने अर्ज तूलके अन्दर कितने ऊंट और हाथी आदि अनेक जन्तु जाते आते हैं ॥ वे सब तुम्हारी आंखकी पुतलीके अन्दर बसते फिरतेहैं ॥ आंखकी पुतली तो सुईके नाकेसेभी बारीक है शाहने मान लिया और सलाम किया ॥ और कहा अब आप जावो जो कुछ होगा फिर देखा जावेगा ॥ लोगोंने कहा बादशाहने हमारी फरयाद नहीं सुनी शेखतकीने कहा यह बहुत बेशरा है ॥ ब्राह्मणोंने कहा यह अधर्मी है बेपता सर्वंगी है जो वेश्या और रैदास चमारको साथ लेकर दरबारमें आयाथा बादशाह और लोगोंसे कुछभी शक नहीं की ॥

बादशाहने फिर बुलाके कबीरजीको कहा कि, आपकी निस्बतलोग ऐसाकहते हैं ॥ कबीरजीने यहशब्दकहा-

राग गौरीका ३ तीसरा शब्द ॥ जब हम एके एक कर जानियां । तब लोगह काहेदुख मानियां ॥ हम अपत आपती पत खोई हमरे खोजपरो मति कोई ॥ ॥ टेक ॥ हम मंदेमन्दे मनमाहीं ॥ सांझ प्रात काहूसों नाहीं ॥ पत आपत ताकी नहीं लाज ॥ तब जानोगे जब उघरैगो पाज ॥ कहै कबीर हरिपति परवान ॥

सर्व त्याग भज केवलराम ॥ कबीर अबलग तो आछी निभी एक सोच रही मनमाँह ॥ जब जी यमके बशपरें तब पत रहेकनाह ॥ फिर कबीरजीको कहनेलगे तू मुसल्मान क्यों नहीं होता तब कबीरजीने यह कहा ॥
दोहा—कबीर सब घट मेरा सांईयां, खाली घटनहीं कोय ।
बलिहारी उस घटके, जा घट परगट होय ॥

सब घटामें एकही आत्मा है एकसे दूसरेमें जाकर क्या होगा फिर काजीने कहा कि, तू एक अदनासा जोलाहा होकर अपने आपको कबीर कहताहै ॥ यह नाम तो खुदाका है फिर बादशाहने कहा तू अपना असली नाम बता तब कबीरजीने कहा कि, मेरा नाम है सो सुनो ॥ शब्द । मेरा नाम कबीरा हो सकल जग जाहरा ॥ टेक ॥ तीनि लोकमें नाम हमारा आनंद है अस्थाना ॥ पानी पवन सुमेर समाना यह विधि रच्यो जहाना ॥ टेक ॥ अनहद लहर गगनमें गरजे गाजै बाज सोहंताली ॥ ब्रह्मबीज हमहीं परकाशा हमहीं अजब खयाली ॥ टेक ॥ यमबंधनते लेवों लडाई निर्मल करौं शरीरा ॥ सुर नर मुनि कोई अंत न पैहैं ऐसे संत गँभीरा ॥ टेक ॥ वेद कतेब कोई पार न पैहे ऐसे मतिके धीरा ॥ कहै कबीर सुनो सिकंदर दोनों दीनकी पीरा ॥ जब तू ऐसा ऊंचा बोलताहै तो जरूर लोगोंका कहना सच है ॥ साल १५४५ था संवतकी और

काजी ब्राह्मण जो बादशाहसे दरपै सजा देने कबीरजी-को जो हुये ॥ तब बादशाहने कबीरसे कहा कि, अरे दोजखी अब भी समझ नहीं तो दोजखमें जायगा ॥

दोजख परैं तुरक और हिंदू ॥ काजी ब्राह्मण सबही भोंदू । इतनी कहतेही कबीरजीके गलेमें तौक पगमें बेडी डालकर हाथमें हथकडी भी लगादी ॥ जब एक किश्ती पत्थरोंसे भरवा कर गंगाजीके धारमें लेजाकर डुबोने लगे तब कबीरजीने अपना रूप बालकका बना लिया ॥ बादशाह तथा और लोग जो देखने लगे तो क्या देखतेहैं ॥ किश्ती डूबने लगी और कबीरभी साथही मंझधारमें लोप होगये ॥ तमाम लोग खुश हुए जो उस वक्त उनके विरुद्ध थे और जो संतजन नेक थे वे रोने लगे ॥ फिर देखते क्या है कि जलमें उलटे चले जातेहैं अर्थात् जिधरसे गंगाजी आतीहैं इधरको मृगछालापर बैठे चले जाते हैं लोगोंने शाहके पास जाकर कहा कि, अबकी दफा इसको आगमें फूको इस दफे कबीरजी जवान नजर आए ॥ एक छप्परमें कबीर-जीको बंद करके आग लगादी ॥ जब आग लगी तब कबीरजी अग्नितत्त्वमें अग्नितत्त्व होकर बैठगये जब आग शरद हुई तब कबीरजी बडे सुन्दर स्वरूप होकर उसमेंसे बाहर आए ॥ तब लोगोंने शोर वो गुल मचाया कि, यह काफर तो बडा जादूगर है ॥ कहने लगे—

नाटक चेटक जुलाहाजाने। शाहसिकन्दर तू मत माने। इसको मस्त हाथीसे मरवाडालो यह कहतेही शाहने गठडी बँधवाकर कबीरजीको मस्त हाथीके आगे फेंका ॥ हाथी चिग्घाड मारके भाग गया ॥ महावतने कहा ऐ बादशाह सलामत ! इस मोटके आगे तो शेरबब्बर खडा है ॥ यह सुनकर बादशाह खफा हो आप सवार होकर जो पेलने लगे तो जरूर एक सिंह आगे खडा देखा उसके चरणों पर गिरा और कहा कि जो कुछ खता मुझसे हुई सो मुवाफकरो और आप जो चाहो सो मुझको दण्ड करो कबीरजीने कहा कि—

साखी—जो तोकों कांटे बोवे, वाकों बो तूँ फूल ॥
तोकों फूलकें फूल हैं, वाकों शूलके शूल ॥

हाथी तीन दफे पेला कुछ न हुआ ॥ एक होरी जो धर्मदासजीने कही है। ऐसो नाम उजागर, होरी खेलन आये ॥ अगम अपार परम सुखदायक, अवगतसो चले आये ॥ टेक ॥ काशीमें प्रगटे दास कहाये नीरूके गृह आये ॥ रामानन्दके शिष्य भये भवसागर पंथ चलाये ॥ १ ॥ काशीमें झांसी करवाई गणिका संग लगाई ॥ हरिके पंडा जलत उबारे अपने चरण जल डारे ॥ २ ॥ शाह सिकन्दर जलमें बोरे बहुरि अग्निपर जारे ॥ मस्त हाथी आन झुकाये सिंहरूप दिखलाये ॥ ३ ॥ निर्गुण कथैं अभयपर गावैं जीवनको समझाये ॥ काजी पंडित

सभी हराये पार कोऊ नहीं पाये ॥ ४ ॥ जो जो जीव शरणागत आये सोई २ सुख पाये ॥ साहिब कबीर मुक्तिके दाता हंसा लोक पठाये ॥ ५ ॥

गुसाईं गरीबदासजीके भक्तमाल शब्दोंमेंसे प्रमाणके वास्ते लिखते हैं ॥

॥ १०४ ॥ साहिब जुलहदी अलहका स्वरूप ॥
काशीनगर बीच आये अनूप ॥
॥ १०५ ॥ जडे तौक बेडी गलेमें जंजीर ॥
लोदी सिकन्दर दई है जु पीड ॥
॥ १०६ ॥ डारे गंगा बीच हुए खडे ॥
राखनहार समरथ तौक बेडी झडे ॥
॥ १०७ ॥ हाथी खूनी बेग लीना बुलाय ॥
मुसक बांध डारि या हाथीके जपाय ॥
॥ १०८ ॥ हाथी दरशसिंह दरशन दयाल ॥
करन शकरी देख बका नवाल ॥
॥ १०९ ॥ पीलवानको आन दीना दीदार ॥
हाथी उलट मोड लीना सहार ॥
॥ ११० ॥ कहता सिकंदर झुकाओ जा फील ॥
करो बेग तडबड लगावो न ढील ॥
॥ १११ ॥ देख्या सिकन्दर दिवाना ज सिंह ॥
आये चितानंदला कोट रंग ॥
॥ ११२ ॥ डंकार गूंजे चले भाग फील ॥

देखा सिकन्दर दसंध्यानलील ॥
॥ ११३ ॥ चरण धोय पीये सिकन्दर सिताब ॥
तुही अर्शमक्का तुही है किताब ॥
॥ ११४ ॥ दिन एक दशमें बुझाया पंड पाय ॥
अटका पडा फूट कीन्ही सहाय ॥
॥ ११५ ॥ बोले सिकन्दरसे हर कौन कीन ॥
पहुँचे जगन्नाथ पंडा अधीन ॥
॥ ११६ ॥ लोदी सिकन्दर गया दूत पास ॥
कैसे बुझाया पाँव कहिये बिलास ॥
॥ ११७ ॥ अटका परा फूट सुनिये बसेख ॥
पहुँचे कबीरा जु साहिब अलेख ॥
॥ ११८ ॥ जलहीम डारा जु शीतल शरीर ॥
पहुँचे जगन्नाथ साहिब कबीर ॥
॥ ११९ ॥ दिन एक दशमें किया है अजाब ॥
भरा है गंगोदक कहैं हैं सराव ॥
॥ १२० ॥ वेश्या बसै एक सुन्दर स्वरूप ॥
गए पीर मुर्शद लई संग अनूप ॥
॥ १२१ ॥ आशिक माशूका सतगुरु कबीर ॥
गले बाँह वेश्या धरै कौन धीर ॥

फिर लोग कहने लगे कि—

दिन दश भक्ति कबीरा कीना। ये देखोसँग गनिकालीना।
भक्ति किया चाहे सब कोई। नीच जाति पै भक्ति नहोई।

बादशाह तो मुल्कगीरीमें मशगूल हुये और संतलोग

कबीरजीके पास आने जाने लगे यहांतक कि, पहलेसे भी जियादह हुजूम होने लगा ॥ ब्राह्मण वा कोताअक्लके लोगोंके दिलमें लहरें उठने लगीं कि, इस जुलाहाको किसी तरह शहरसे बाहिर किया जावे । चार ब्राह्मणोंका शिर मुंडवाकर यह समझादिया कि फलाने महीनेकी फलानी तिथिको कबीरजीके यहां भंडारा है तुमको जरूर चलना होगा । सबको झूंठे पत्र देकर विदा किया उन्होंने बाहर जाकर दो २ चेले हर एकने किये द्वादश ब्राह्मणोंने देशान्तरमें जाकर झूंठे दल देने शुरू किये लोगोंने और संतोंने शिर मानके लिये थोडी मुहूतके बाद सन्तोंकीजमातें आने लगीं ॥ जब भेपोंको आते रैदासजीने देखा तो कबीरजीके पास जाकर कहा कि, अब आप काशीमें नहीं रहसकेंगे लाखों सन्त आपके यहां आते हैं ॥ एक सन्तने कबीरजीसे पूँछा कि, कबीरजीका घर कहां है ? कबीरजीने जवाब दिया कि सब जगह है । जो जो संत आते उनको पंडित लोगोंने उतारना शुरू किया । इतनेमें कबीरजी वहांसे उठकर ढोलक तँबूरा साथ लेकर एक जंगलमें जाकर गानेलगे ॥

राग गौरी ।

११२ ॥ अब मोहिं राम भरोसो तेरो ॥ और कौमको करौं निहोरो ॥ टेक ॥ जाके राम सरीखा साहिब भाइ सो क्या अनत पुकारन जाई ॥ १ ॥ जाके शिर तीन लोकको भारा सो क्यों नकरे जनका प्रतिपारा ॥ २ ॥

कहैं कबीर सेवो बनवारी ॥ सींचो पेड पीवें सब डारी ॥

भक्ति अंग दिखायके ऐसे गाये कि, सत्य लोकमें टेर पहुँची जुलहदी जंगदु हूं दीनमें रोपया तहां नौलाख बोडीउपाई ॥ करुद केसो केसो किया हुक्म कबीरसे आन जौनार काशी जमाई ॥ लाए तार लौलीनहो ये रूप विहंगम माह ॥

गरीबदास जुलहा गया अगमपुरी निजठाँह ॥ जरद श्वेत अरु हरे नग बोडी भरी अनन्त ॥ गरबिदास ऐसे कहा लेंवो कबीर भगवंत ॥ बिनाय काया पकरहा उतरे असंखमीर ॥ गरीबदास मेला शुरू जैजै होत कबीर ॥

कई आदमी कबीरजीको तलाश करके मकानपर लाये बादशाह फिर काशीमें आए भंडारेका शोरसुनकर ताज्जुब करने लगे ॥ लाखों आदमी जो देखे तो बहुत फिक्र किया । ऐसा न हो कि, कुछ मुल्कमें फतूर मचे बंदोबस्तके वास्ते काशीमें मय लश्करके ठहर गये ॥

ब्रह्मवेदीमेंसे ॥ ४४ ॥ अजामिलसे अधम उधारे पतितपावन बिरदतास है ॥ केसो आन भया बनजारा षटदल कीनी हास है ॥ ४५ ॥ धनाभक्तका खेत निपाया माधो दई सकलात है ॥ पंडा पांव बुझाया सतगुरू जगन्नाथको बात है ॥ भक्तहेत केसो बनजारा संग रैदास कमालथे ॥ हेहर हेहरदोती आई गोन छुई और पालथे॥४९॥

गबखियाल विशाल सतगुरु अचल दिगम्बर थीर है ॥ भक्तिहेतु काया धरि आये अवगत सत्य कबीर है ॥

अरिल ।

के सो नाम कबीर खुलासा फिरत है ॥ अनन्त कोट संग बोडी बादल डुरत है ॥ अजर मुनक्का दाख छुहारे छोतके ॥ केसो संग बनजारे एकै गोतके ॥ पीतांबर पहरान सुरोंकी सैलरे आए काशीधाम लादकर बैलरे गेहुं चावल चून मिठाई दालरे ॥ घृत सहित पकवान धरी जहां पालरे ॥ शाहसिकंदर सुनकर मेले आइया ॥ हरिहांमहबूब कहता दासगरीब भेद नहीं पाइया । बादशाहने कबीरजीसे कहा चलो मेला देखे देखें कैसा है ॥ जवाब—एक चदरी एक गुदरी हमरे पासरे । हम नहीं निकसैं बाहिर होयगी हांसरे ॥ शाह सिकन्दर सुनकर जोरे जात है बोले माय कबीर यहां कुछ घात है ॥ जहां शाह सिकन्दर सत्यगुरुगोष्ठी कीनियां । तुम करता पुरुष कबीर तबै वह चीन्हियां ॥ एक हलकारा आनतंबूमें लेगया । केसो और कबीरसों मेला देगया ॥ तीन दिवस दरवेश महातम मालवे । गैबी फिरै नकीब कूचकर चालवे ॥ गंग उतर कर गायक हुए दल भिन्नरे ॥ कहां गये बनजारे बोडी अन्दरे ॥ केशव और कबीर मिलत एको भए । हरिहां महबूब कहता दास गरीब तकी शेवदहे ॥ शाह सिकन्दर चरण जुहारे जानकर । तुम करता पुरुष कबीर बसोउर आन कर ॥ तुम खालक सर्वज्ञ स्वरूप कबीर है । हरिहां महबूब कटता दास कबीर पीर शिर पीर हैं ॥ मारू ॥ सतगुरु आदिभक्ति

उपराजी हो। वेदकितेब करनी दिसमें झगरैं पंडित काजीहो ॥ टेक ॥ रेजंबूपशहर सब दुनियां कोई न तासों राजी हो। ऐसा ज्ञान अमान तासुका किया जगत् सब माजीहो ॥ षट्दर्शन और दुहूदीनका अन्दर हिरदा दाझीहो। सारी सृष्टि इष्टिको निंदै सब दोजखके साझीहो। हाफत हेत कुहेत करत है पीरमलाने हाजी हो ॥ राम नामकी निंदा करके बूडत हैं सबबाजी हो। ज्ञान तुरंगमके असवारा चढे कबीराताजीहो ॥ यह संसार पार नहिं पावे सतगुरुके पाती हो। अनंतकोटि युग बूडत होगये झूठे गुरुवा काजी हो ॥ दास गरीब नहीं कोई सरवर चढे कबीरा साजीहो। सतगुरु भगत अनाहद लायेहो। अलल पंख होय किया पियाना गगन मंडलकूं धायेहो ॥ टेक ॥ नाद बिंदु सिंधु बिन सरवर जहां उहां हंस चुगाये हो ॥ कुन्धी भँवर उजल अनुरागी कमल ध्यान बिरमाएहो ॥ अधरचंद जहां अधर कमोदन देखत कबों न धायेहो ॥ सूरजमुखी शंख सरवरमें मानकहंस अचायेहो ॥ ४ ॥ अधर अलंग मगहै हमरा पंथी पंथ न पायेहो ॥ मादर पिदर नहीं सतगुरुके ना वे जननी जायेहो ॥ ५ ॥ अधर अमान ध्यान धर देखो नाकहिं गये न आयेहो ॥ है अनुरागी लख बडा भागी पूजत नहीं पुजाएहो ॥ ६ ॥ अरेशमाह खटकून खयालहै दीखत नहीं दिखायहो ॥ अर्धचंद्र अंकुशहै स्थिर मौज मेहरसे आयेहो ॥ ७ ॥ रौनक रूप

आईना असली माथ मुकुट दरशायेहो ॥ दासगरीब कबीर मेहरसों फूलमाल पहरायेहो ॥ शब्द ॥ काशीमें कैसो कबीर भए कलिके भवभार उतारनको ॥ काम क्रोध अहंकार बली तिनते निज हंस उबारनको ॥ जिन आनके शरणगही उनकी तिनते संशय सबटारनको ॥ देउपदेश पवित्र किए जनके दुख दोष निवारनको ॥ सत्य नामको डंकबजायदियो हरीदासके कार्यसारनको ॥

यज्ञका होना तमाम भरतखंडमें विदित है ॥ नीरू और नीमा तो इसी साल मुक्तिको प्राप्त हुए ॥

आगे हाल गोरखनाथके मिलनेका चला ॥ नौलाख चौरासी सिद्ध बावन वीर चौसठ योगिनीको साथ लेकर गोरखनाथ नाम योगी गिरनारसे कबीरजीका हाल सुन कर चला जब काशीमें आया तब सीधा रामानन्द स्वामीकी सभामें जाकर त्रिशूल धरतीमें गाडकर त्रिशूलके ऊपर जा बैठा और स्वामीजीसे कहा कि जो कोई वैरागी आपके भेषमें दूसरे त्रिशूलपरबैठ सके तो यह खडी है आवे, वरनै सबके कान फाडके योगी बनालूंगा ॥ यह बात सुनकर रामानन्दजीतो अपने अन्तर्धान होकर देखनेलगे चारों सम परदाके सन्त बैठेहुये थे सबके आसन नीचे दीखे ॥ गोरखनाथका आसन सबसे ऊंचा । जब और सुरतीको ऊपर लेगये तब कबीरजीकी सभा देखी ॥ जिसका सबूत नाभाजीकी वाणीसे होसकता है ॥ जो कुछ नाभाजीने अपने मुखसे कहाहै सो

लिखते हैं ॥ अनन्त कोट निज भक्त हैं तामें एक करोड ॥ लाख लाख नेजाधरी समर्थ सहस्रसौ तामें अधिकारी पं- चास भक्तपरसिद्ध पचीसों परम उजागर ॥ द्वादश भक्त प्रमाणा षट्‌रस गुणके आगर ॥ चतुर भक्त गोविन्ददरश उभै भक्त तारण तरण ॥ तामें मुख्य कबीरहैं तापदकी नाभा शरण ॥ वाणी अरबो खरबहैं, ग्रंथन कोटहजार ॥ करता पुरुष कबीरहै, नाभो कियो विचार ॥

जब स्वामीजीने ध्यानमें यहरचना देखी तो कबीरजीको याद किया जब नेत्र खुले तब देखते हैं कि कबीरजी आगे खडे हैं ॥ स्वामीजीने कबीरजीसे कहा कि नाथ आये हैं॥ इनकी खातिरजो कुछ बनपडे सो करनी चाहिये ॥ कबी- रजीने नाथजीसे कहा कि चलो डेराकरो ॥ नाथजीने कहाकि पहिले यहां अपने गुरवोंको कहो कि त्रिशूलपर बैठें या आपही बैठें ॥ तब कबीरजीने यह कहा अयनाथ! त्रिशूलपर या बाँस बरतपर तो नटभी चढसकते हैं मैंने आपके वास्ते आसन अधरमें बिछाया है॥ अगर आपउस पर बैठसकेंगे तो जो आप कहेंगे सो हम सब करेंगे ॥ इतनी कहकर कबीरजीने एकनलीमेंसे धागा निकालकर जमीनमें मेख लगाकर लिपटा दिया दूसरा शिरा उसका ऊपर को फेंक दिया । ऊपरसे आवाज आने लगी कि, हे नाथ आसन तैयार है आइये नाथजी हैरान होकर त्रिशूलसे नीचे उतर आये ॥ ड्योढीमें बैठकर गोष्ठी हुई। जो वहुत है अगर लिखीजावे तो एकग्रंथ बनजावेफक्त

एकशब्दही लिखाहै ॥ शब्द ॥ साहिब कबीरतनाएक ताना ॥ टेक ॥ एक खूंटी धरनीमेंगाडी दूसरीले आकाशको जाना ॥ टेक ढीलभई पाई सूतउरझाना ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश भुलाना ॥ टेक ॥ ताना तन सतगुरु घर आए ब्योढीमें बैठे गोरख समझाना ॥ टेक ॥ कहहिं धर्मदास सुनो भाई साधो बिनताबिनत अनमोल बिकाना॥ ॥ टेक ॥ नाथजीने कबीरजीको आदेशकिया और भेष उतारके चरणोंके ऊपररक्खा ॥ टोपी कुपीन कुबरीझांडा झोरी साथ दिया भई कबीरकी चढाई गोरखनाथ ॥ फिर बहुत अधीन होकरपूछते हैं कि हे कबीरजी ! आपकी उमरक्या है ? तब कबीरजीने जवाबदिया ॥ शब्द ॥ जो बूझे सो बावराक्या है उमरहमारी । हमतोसदा मालूम हैं खेलें युगचारी ॥ टेक ॥ कोटि विष्णुहो हो गये दशकोटिघना इया । अनंत कोटिशम्भु भयेमेरी एक पलाइया ॥ कोटि ब्रह्म होहोगये महम्मदचारयारी ॥ देवतनकी गिनती नहीं क्या है सृष्टिविचारी ॥ टेक ॥ नहिंबूढा नहीं बालकानाहीं जगतभिखारी ॥ कहहिंकबीर सुनो गोरखा यह है उमर हमारी ॥ टोपी कुलीन झांडा झोरी भेषजीना शब्द कबीर तब गोरख कीनआदेशा ॥ दोनों गोरख गोष्ठ हैं और एक समाज है ॥ कबीरसागर और कबीर बाटिका में मौजूद हैं फिर थोडीदेरके बाद गोरखजीने कबीरजीसे नशामांगा आपके पास हो तो दो ॥ कबीरजीने यह शब्द कहा । अलमस्तायोगी नाम अमल मद माता ॥ टेक ॥

तनकर कूंडी मनकर सोटा घोटो दिन औ राता॥जतन२ कर छान लेव तुम प्रेमकी साफीहाथा॥ रसनकटोरी भर २ पीवो पांचो इंद्रीसाथा ॥टेक॥ राम २ रंग भीनरहो है क्यासीलाक्याताता। गुरुका शब्द अग्निका किनका जब छेडातब जागा। शिरके सांटे भक्तिकबूली क्या तनकीकुशलाता ॥ टेक ॥ कहहिं कबीर मगनहै नाचो क्या संध्यापरभाता ॥

ऐसे २बहुत शब्द हैं। फकत थोडेही लिखते हैं॥गोरख जी तो बंदगी करके चलेगये॥ एक रोज पद्मनाभजी जो कबीरजीके परले चेले थे आए। दंडवत् देकरके अर्ज करने लगे कि, हे स्वामी! जो आज एक कुष्ठी साहूकार गंगाजीमें डूबनेको गयाथा॥ जब डूबने लगा तब मैंने जो शब्द हुजूरने मुझे जपनेको बताया है उसको तीनवार जपवाकर गोता लगानेको कहा॥ उसने तीनदफे राम राम कहकर जो गोता लगाया तो उसका शरीर उसी वक्त आपकी दयासे शुद्ध होगया जब यह बात पद्मनाभकी सुनी तो कबीरजीने कहा कि, अरे पद्मनाभ! तुझको अभी रामनाम पर निश्चय नहीं हुआ है॥ एक कुष्ठीका कुष्ठ दूर करनेको तीनदफे राम राम कहलाया॥ रा उचरत अघ परि हरैं, कहो भाग कित जांय। ज़ोमकार पढ मिलैतो अन्तर भस्म ह्वैजांय पद्मनाभजीको पहलेसेभी अधिकविश्वास होगया॥ नामकी महिमा दिखानेको प्रमान। नाम महा निधि

मन्त्र नामही सेवा पूजा । जप तप तीरथ नाम नामबिन और न दूजा ॥ नाम परतीत नाम वैरं नाम कहि नामहि बोलै । नाम अजामिल साख नाम बंधनते खोलै ॥ नाम अधिक रघुनाथसे राम निकट हनुमत कह्यो । कबीर कृपाते पद्मनाभ परमतत्त्व परचे लह्यो ॥ तत्त्वाजीवा दो भाई ब्राह्मण दक्षिण देशमें. नर्मदा नदीके किनारे गुजरातके जिलेमें रहते थे उन्होंने अपने आंगनमें बडका सूखा ठूंठगाडकर यह प्रण किया कि जिस महान् पुरुषके चरणोदकसे यह ठूंठ हरा होगा उसको गुरु धारण करैंगे । चालीस वर्ष तक हजारहों संतोंके चरण पखाल कर उस ठूंठको सींचते रहे परन्तु हरा न हुआ जब दक्षिण देशमें सन्तोंका निरादर होनेलगा तो कई एक संत काशीमें कबीरजीके पास आये और, यह सब हाल कहा कि, आपके होते संतोंका निरादर होता है । कबीरजीने कहा ॥

दोहा—कबीर—साधु हमारी आतमा, हम साधुनकी देह ।
साधुनमें हम यों रहैं, ज्यों बादरमें मेह ॥

दोहा—कबीर—साधु हमारी आतमा, हम साधुनके जीव ।
साधुनमें हम योंरहैं, ज्यों गोरसमें घीव ॥

दोहा—कबीर—साधु हमारी आतमा, हम साधुनकेश्वास ।
साधु नमें हम यों रहैं, ज्यों फूलनमें बास ॥

संत कबीर जीके पाससे बिदा होकर दक्षिणको गये । छः मासमें जाकर पहुँचे जब उस स्थानमें गये तो क्या

देखते हैं कि, कबीरजी सबाँगरूप धारण करके टहल रहे हैं। जब उस ठूंठके पास होकर लखे तो संतोंने तत्त्वा जीवाजीसे कहा कि, एक साधु तुम्हारे ठूंठके पाससे होकर जाता है तुमने उसके चरण क्यों नहीं धोए है जब उन्होंने देखा तो कहा कि, अभी धोते हैं जाकर कबीरजीके चरणोंमें लिपटगये ॥ चरण धोकर उस ठूंठके ऊपर जब वह चरणोदक गेरा उसमेंसे कोंपल निकल आए॥ तत्त्वा जीवाजीने कबीरजीको गुरु धारण किया ॥

दोहा—गरीब—तत्त्वा जीवाको मिले, दक्षिणबीच दयाल।
सूखा ठूँठ हरा हुआ, ऐसे नजर निहाल ॥

दूसरा प्रमाण नारायणदासजीकी भक्तमालके टीकामेंसे॥

तत्त्वाजीवा भाई उभय विप्र साधु सेवापन मनधारि ॥ चाकोइ शिष्य नहींभये हैं ॥ गाड्यो एक ठूँठ द्वार होय अहो हरी डार संत चरणामृत लैके डारिनए हैं। जबहिं हरित देखें ताको गुरुलेख आप श्रीकबीर पूजी आश आय पाँव लिये हैं॥ नीठि नीठि नाम दियो दियो परेचाय धाम काम कोऊ होय जोपै आओ कहि गए हैं॥ कानाकानी भई द्विज जाति पांति गई पांति न्यारी करदई कोऊ बेटी नहीं लेत है ॥ चल्यो एक काशी जहां बसत कबीर धीर जाय कही पीर जब कौन हेत है ॥दोऊ तुम भाई करो आपमें सगाई होय भक्ति सरसाई न घटाई चित्त चेत है ॥ आय वहे करी परीक्षा ज्ञात खर-बरी कहैं

कहा उर धरी कछू मितिहि अचेत है ॥ करै यही बात इमैं औरना सुहात आये सबै हाहा खात यह छांडि हठ दीजिये ॥ पूछिबेको फिरि गए करो व्याहु ओपै नए दंड करि नाना भांति भक्ति दृढ कीजिये ॥ तब दई सुता लई पांतिन प्रसन्न ह्वैके पांति हरिभक्तिनसो सदा मति भीजिए । विमुख समूह देखि सुमुख बडाई करैं धरैं हिय मांझ कहै प्रण पर रीझिये ॥

अबतक इस बडको "कबीर बड" कहते हैं, और सात हजार आदमी उसके साएमें आराम पासक्ते हैं भूगोल हस्तामलकमें इसका जिक्र है॥अङ्गरेजकी चौथी किताबमें भी इसको लिखा है। समन भक्तकी कथा गरीबदासजीके ग्रंथमें मिलेगी ॥ उसकी स्त्रीका नाम नेकी और बेटेका नाम सेऊ था । जब उनके घरपर कबीरजी गये कमाल वा फरीदाके गये । उस दिन उनके घरमें भोजन संतोंके देनेको कुछ था ॥ सेऊने तीनसेर अनाज बनियांकी दूकानसे लिया । बनियांने पकड लिया समन उस अनाजको घरमें लाया उसकी औरत नेकीने भोजन तैयार किया समनने फिर दूकानपर पहुँचाके सेऊका शिर काटलिया ॥ और लाकर ताकमें रखदिया । जब रसोई तैयार हुई तो कबीरजीने छः पनवाडे बनाकर पारुस किए सेऊको पुकारा सेऊके शिरमेंसे आवाज आई कि, मेरा शिर कटा हुआ पडा है कबीरजीने आवाज दी कि, चोरोंके कटते हैं संतोंके नहीं क्योंकि

वे साहदिबकेनामपर कुरबान होतेहैं ॥ सेऊ उठकर पंगतमें बैठके जीमा यह बात गरीबदासके ग्रंथमें लिखी हुई है ॥ २८॥गरीब—आवो सेऊ जीमलो, यह प्रसाद अति प्रेम। शीशकटतहैं चोरके, साधों नितखेन ॥ २९ ॥ गरीब, सेऊ धड़पर शिर चढ्या, बैठे पंगति माहँ। नहीं धरहडा नाडके, अहो सेहुँ अक नाँहँ ॥ आगे कबीरजीके साथ जो गोष्ठी रैदासकीहुईहैउसमेंसे प्रमाण थोडासा लिखा है बहुतसा देखनाहोतोकबीरसागरमें मिलेगा। रैदास उवाच॥माधव नाहिं हित मोरा। केसमें तोरा ॥ कुकु मततनादल बादल फांदे, सुमति भई परकासा । हृदय ज्ञान ध्यानधर देखो, सत आपै रैदासा ॥ २ ॥ कबीर उवाच ॥ ब्रह्मज्ञान बिन ब्रह्मध्यान बिन हृदय शुद्ध न होई ॥ एकै ब्रह्मसकल घट व्यापक द्वितीय और न कोई ॥ ३ ॥ रैदास उवाच ॥ नमो नमो निरंकार तोहिं नमो कृपालु कबीर । जन रैदास स्नानकर साधुनदी हर नीर ॥ यह श्लोक अंतका है ॥ पहले दोआदिके झाली रानी चित्तौरगढकी कबीरजीकी शिष्य होनेको आई कबीरजी गुदडीमें गुड लगाकर बैठरहे । लाखों माखी लगरहीं ॥ रानीको श्रद्धा रही । रैदासके ढावकरकी छवि निहार रैदासकी चेली भई । रैदास पकरे गये हैं कबीर काशी शहर कौन.साखी शरीर पंडित पढै पाठ करतेजसेव ॥ जुलहे बुलाए पथरके जदेव तमाम काशीके पंडित उस रोज हार गए और बरको उदास होकर चले

गए । बादशाहने दोनोंको आदर सत्कारके साथ विदा किया ॥ रैदासने कबीरजीके चरणोंको दंडवत् की और कहा कि, आप साहिबरूप हैं इस दासको सदैव काल अपने चरणकमलोंके आश्रित जानियेगा ।

श्वपचरूपधर सतगुरुआये । पंडोजगमेंशंख बजाये ॥ जलबूडेनहीं अनलजलाई । ताकीपूजा करोरेभाई । खड्ग बाणशस्त्र नाहिंछेदं । ताकोकैसेपावेवेदं ॥ वेदपुरानो लखान जाई ॥ पंडित कहाकहांगणगाई ॥ पिंडब्रह्मांडदुहूँतेन्यारा हदबेहदसे अगमअपारा ॥ मायाके शब्दोंसे पहलेनानक बोधलिखताथासो भूलगयादूसरी पोथीमें जरूरलिखना चाहिये नानकका जन्म १५२६ में हुआ और १५९६ में देहांत नेई नदीमें गोतलाया ॥ साल ॥ १५५३ ॥ में उसवख्त २७ सालकी उमर थी नानकजीकी ॥ और उस वख्त कबीरकी उमर ९८ वर्षकी थी ॥ आगे माया छलनेको आई ॥ तब कबीरजीने कहा हे माई ! अपने स्थानको चलीजा ॥ मायाने कहा मुझको इंद्रने आपकी टहल करनेको भेजा है कबीरजीने कहा मैं गरीब जोलाहा हूँ किसी बड़ी जगहमें जा मेरे ढिग बैठकर लाजसे मरेगी मैं किसी संतके हवाले करूंगा तो तू पानी ढोती ढोती मरेगी तू किसी तरहसे रह मैं तुझको खूब जानताहूँ ॥ कहने लगे अगर बहुत नहीं रखते तो दो चार रोज अपनी टहलमें रक्खो ॥ कबीरजीने कहा कि, नारी तो नरककी निशानी है महाराज बोले कि, तू तुलसीकी माला पह-

नकर साहिबको यादकर थोडी देरके बाद माला पहनकर आई ॥ तब कबीरजीने कहा कि, मैं तुझको खूब जान-ताहूँ ॥ तेरे काबूमें नहीं आता हूँ अगर तू कंदका मृदंग बनावे और नीबूका मंजीरा और पांच तोरियोंको साथ लेकर खीरा नाचे और मंगल गावे तौभी हमतेरे फंदेंमें नहीं आते हैं भला शोच तो सही कहीं भैसका आशिक चूहा होसक्ता है ॥ अगर मेंडक तो ताल बजावे और चोलना पहरकर ऊंटभी नाचे तौभी हम तेरे जालमें नहीं आते ॥ यह जो तैंने तुलसीकी माला फरेब करके पहरी है इससे तुझको कुछ नफा नहीं मिलेगा और न हम इस फरेबसे तेरे काबूमें आवेंगे खयाल कर अगर मछली पेड पर चढकर फल तोडे और कछुवा उनको इकट्ठेकरे यह अयोग्य है यह हो तो हो पर हम तेरे मक्कर फरेबमें नहीं आते हैं ॥ तू उस जगह जा जहां तेरी खातिर मांस मद्या-दिक पदार्थोंसे होवे कलूके लोग करते हैं । तैंने पहले जो लोग छले हैं मैं खूब जानताहूँ अय कबीर ! तुम नाहक मेरा नाम लेतेहो मैंने किसको गिरायाहै ॥ भला एकका तो नामलो ॥ अब कबीरजीने यह बात सुनके कहना शुरू किया ॥ सुनु कुछ थोडेसे बोलताहूँ ॥ १ ॥ मार्कण्डेय ॥ १ ॥ शृङ्गऋषि ॥ १ ॥ भस्मासुर ॥ १ ॥ शंकर गोरख कच्छदेशमें ॥ १ ॥ गौतम ॥ १ ॥ उसकी स्त्री ॥ १ ॥ चन्द्रमा ॥ १ ॥ इन्द्र ॥ १ अञ्जनी ॥ १ ॥ नारद ॥ १ ॥ गधी बनकर हमारे छलनेको आई फिर

हमने तुझको निकाला अब फिर तू हमको छलने आई है तू देख अगर एक सुन्दर पिटारीमें काला सर्प डालकर उसको बन्द किया जावे और एक अनजान चूहा उसको देखके उसको काटकर अन्दर जावे क्या वह सर्प उसको नहीं खाजावेगा । अब बसकर हे माता ! पत्थर पानीमें कभी नहीं भीगता है माया हारकर चलीगई ॥ जाकर इन्द्रसे कहा कि, कबीरके आगे कुछ नहीं चलती वह तो जगद्गुरु हैं मायाके ऊपर कबीरजीने बहुत शब्द कहे हैं ॥ थोडेसे प्रमाणके वास्ते लिखेहैं ॥ जो खुलासा पहले कहचुके हैं ॥

दोहा—कारी नागन विषभरी, विषले बैठी हाट ।
पालेपरी कबीरके, कीन्ही बारह बाट ॥

शब्द दूसरा ॥ २ ॥ ठगनीका नैना झमकावे कबीर तोरे हाथ ना आवे ॥ टेक ॥ काहू काट मृदंग बनावो नीबू काट मँजीरा, पांच तुरैयां मंगल गावैं नाचे बालमखीरा ॥ टेक ॥ भैंस पद्मिनी चूहा आशिक मेंडक ताल बजावे । चोला पहर गधैया नाचे ऊंट विष्णुपद गावे ॥ टेक ॥ रूपा पहरे रूप दिखावे सोना पहर रिझावे । गले डाल तुलसीकी माला तीन लोक भरमावे ॥ टेक ॥ आम चढे मछली फल तोरैं कछुवा चुन चुन लावे ॥ कहि कबीर सुनो हो संतो बिरला अर्थ लगावे ॥ टेक ॥ शब्द तीसरा ॥ ३ ॥ मस्तानी धोबन हम जानी भ्रम घुगरूबजार दीवार ॥ टेक ॥ मार्कण्डेय लारे लागी

शृङ्गीऋषिके रंगमें पानी नैनकी सैन चलावे शारदा भस्मासुर कियेछार ॥ २ ॥ टेक ॥ नौनाथ पलकोंमें राखे सिद्ध चौरासी झुक झुक झाके उद्दालक ऋषि तिरि-याके कारण गये ब्रह्म दरबार ॥ मोहनी रूप धरा भगवाना शंकर होद भरा हम जाना ॥ कच्छ देश रत्ना-गर सागर दिया गोरख शिर भार । टेक । गौतम ऋषिकी नारी अहल्या दिया शाप धोवन घर गालिया ॥ शशि कलंक इन्द्रके सहस्र भग अंजनीके पुत्र कुमार ॥ टेक ॥ साठ पुत्र नारदके कीने पुत्रहेतु बहुत दुख दीने चलत उडगई छार ॥ टेक ॥ खरका रूप धरा मृगनयनी, ताना तोडा तब हम जानी ऊंचे चढ दामिनिसी दमके सैन मिलागईबार ॥ टेक ॥ काशीमें कीरति सुनि आई कहैं कवीर मोहिं कथा बुझाई गुरु रामानन्दजीके चरण क-मल पै तैं धोवनदीनी वार ॥ शब्द चौथा ॥४॥ मायामहा ठगनी हमजानी त्रिगुणफांसलिये कर डोले बोले मधुरी वानी ॥ केशवके कमला है बैठी शिवके भवन भवानी । पंडाके मूरति है बैठी तीरथहूमें पानी ॥ योगीके योगन है बैठी राजाके गृह रानी, काहूके हीरा है बैठी काहूके कौडी कानी । भक्ताके भक्ति है बैठी ब्रह्माके ब्रह्मानी ॥ कहैं कवीर सुनो हो सन्तो ये सब अकथ कहानी ॥

लोग कहनेलगे कि, हे स्वामीजी ! यह तो बहुतअधीन-तासेआपके पासरहना चाहती है ॥ कवीरजीने शब्दमें जवाब दिया ॥

शब्द ॥ ई माया रघुनाथकी बौरी खेलन चली अहे-राहो ॥ चतुर चिकनियाँ चुनि चुनि मारे काहू न राख्यो नीराहो । मौनी वीर दिगम्बर मारे ध्यानधरंते योगीहो । जंगलमेंके जंगम मारे माया किनहु न भोगी हो । बेद पढंते पांड़े मारे पूजा करते स्वामीहो । अर्थ बिचारते पंडित मारे बांधे सकल लगामीहो । शृंगी ऋषिवनभीतर मारे ब्रह्माका शिर फोरेहो । नाथ मछन्दर चले पीठते सीगलहूँमें बोरेहो । साकटके घर करता धरता हरिभक्तनके चेरीहो । कहैं कबीर सुनो हो सन्तो ज्यों आवे त्यों फेरीहो ॥ कबीर मायामारमन मारिया, राखा अमर शरीर । आशा तृष्णा मारके थिर ह्वै रहे कबीर ॥ कबीर मोटीमाया सब तजे, झीनी तजी न जाय । पीर पगम्बर औलिया, झीनी सबको खाय ॥ कबीर माया जातहै, सुनो शब्द निज मोर । सखियोंके घर संतजन, सूमोंके घर चोर ॥ कबीर जो धन संचिये, सो आगेको होय ॥ मूंड चढाया गाठरी, लेजात न देखा कोय ॥

जब कबीरजीके मगहर जानेमें थोडे दिन बाकी रहे तब सब सभाके लोगोंसे कहा कि, अब हम काशीको छोडेंगे तबलोगोंने अर्ज की, कि सारी उमरकाशीमें कटीहै अब मगहरमें जानेको कहते हैं यह बात शास्त्रके विरुद्ध है कबीरजीने जवाब दिया । बीजकका तीसरा ३ शब्द लोग तूंही मतिको भोरा । जे वो पानी पानीमें मिलि गयो तें वों धूरी मिले कबीर । जो मैथीको सचानाल ॥

तो हरि मरन होई मगहर पास । मगहर मरों मरे नहिं पा-
वों । अंत मरो तो राम लजावों ॥ मगहर मरे सो गदह
होई । भल परतीत रामकी खोई ॥ क्या काशी क्या ऊ-
पर मगहर जोपै राम हृदय बसै मोरा । जो कबीर
काशी तनु तजै तो रामहिं कौन निहोरा ॥

इतिहास कमाल कमालीका ।

जब दो रोज जानेमें बाकी रहे तो कमाल वा कमाली वा
हरिदेवपंडित कहनेलगे । हे स्वामीजी ! आपनेतोमगहरकी
तय्यारी की है और हमारा क्या हाल होगा जो आप-
केही आसरेसे रात दिन गुजर करते हैं कबीरजीने जवाब
दिया हे कमाल ! लाल तेरे जो संत होवेंगे सो कबीर-
नामसे पुकारे जावेंगे ॥ फिर कमालीकी तरफ नजर
फेरकर जो देखा तो उससे कहा हे कमाली ! तेरी सन्तान
भी कबीर नामसे पुकारीजावेगी. तब कमालीने कहाकि,
हे स्वामीजी ! इन दोनोंकी पहचान क्या होगी । फिर
कबीरजीने फरमाया कि कमालके सन्त कबीरपंथी और
तेरी औलाद कबीरवंशीके नामसे पुकारे जायँगे ॥ उस
वक्त कबीर दशहजार सेवक और सन्त जमाथे ॥ चारों
वर्णके ब्राह्मण बहुतथे ॥ क्षत्री उनसे ज्यादह और वैश्य
कुछ कम थे । शूद्र उनसेभी कमथे जो महाराजके दहनी
तरफ गृहस्थ थे उन सबको यह आज्ञा हुईहै कि जो इस
वक्त कमालीके साथ मिलेगा वह कबीरवंशी कहला-
एगा जिनके दिलमें उस वक्त प्रेम हुआ वे मिलगये

और नाम कबीरबंशी पाया देनलेन आपसमें जिनकी हुई है वे कुल एकसौआठ (१०८) गोत्र हैं ॥

इतिहास मगहर जानेकी ।

मगहर काशीजीसे छह मंजिल है जिला गोरखपुर, बीरसिंह बघेला पहलेही अपने लश्कर समेत वहां पहुँच गयाथा और बिजली खान पठान वहांका नव्वाब था उसने जब सुना कि, कबीरजी यहां आखीरका दिन करने आतेहैं और बीरसिंह बघेला राणाभी उनका शिष्यहै और मैंभी उनका मुरीद हूं कबीर साहिब तो मुसल्मान हैं मैं उनको दफनाऊंगा ॥ सुनाहै कि, राणाजी उनकी लाशको जलाना चाहतेहैं । यह बात कभी नहीं होने दूंगा माघ सुदी एकादशी, दिन बुधवार, संवत् १५७५ को काशीको तजकर मगहरको चले ॥ काशीके लोग बहुत उदास होकर कहने लगे कि आज कबीर-जीके बगैर काशी सूनी नजर आतीहै । जैसे चांदके बिन तारे, तमाम काशीमें उस रोज अन्धेर होगया । सब लोग यह कहते थे कि हमारे भाग्य मंदहैं जो हमने ऐसे महापुरुषके वचनोंको नहीं माना । हाय अब क्या करें ? पीछेसे खराखोटा मालूम होताहै, उसी वक्त मगहरमें एक छोटासा हुजरा किसी सन्तका था उसमें जाकर बैठगये वह कांठडा अमीनदी जो अब कहातीहै उसके किनारेपर था ॥ वह नदी सूखीथी कमलके फूल और दो चद्दर मँगवाकर लेट गए सबको कहा कि ताला

बन्द करदो ॥ तब बीरसिंहने कहा ऐसाहिब ! आपकी अंतकी गति कैसी होगी मेरा इरादाहै कि, आपके शरीरको अग्निमें प्रवेश करूंगा ॥ बिजलीखां पठानने कहा कि, मैं कभी आपको ऐसी हरकत नहीं करनेदूंगा, तब कबीरजीने फरमाया कि कभी शस्त्र न चलाना जो मेरे वचनको मानेगा सो आनन्द रहेगा ॥ सबने दंडवत् और बंदगी की ! सबके दिलउदास होगये ॥ तब कबीरजीने चलावेके शब्द जो कहेहैं सो पीछेसे लिखे जायंगे चद्दरको मुखपर लेकर कहने लगे कि, ताला बन्द करदो जब ताला बन्दहुआउसवक्त एक ऐसी ध्वनि हुईकि, सबके दिलोंपर तासीरहोगई । जयजयकारहुआ सत्यलोगको सिधारा ! जब ताला खोला तो फकत कमलके फूल और दो चद्दरहीं बाकीरहीं ॥ एक चद्दरराजाने उठाई मयफूलोंके और दूसरी पठानने, उसने जलाकर चौराबनाया और बिजलीखानने कबर। एकमन्दिरमेंदोनों मौजूदहैं ॥ मकरके महीनेमेंवहां मेलाहोता है । वहनदीजोसूखीथीउसीरोजसेउसमेपानी जारीहै। उसीदिनसे उसका नाम अमी नदीहै ॥ जोशब्द अन्तके समयमें कहेहैं वे येहैं ॥ रागगौरी ॥ दुलहनीगावो मंगलचार ॥ हम घर आए राजाराम भरतार ॥ टेक ॥ तन रतकरहूं मन रत करहूँ पाचों तत्त्व बराती । रामदेव मोरे पाहुन आए मैंजोबन मदमाती । शरीर सरोवरबेदीकरहु ब्रह्मा वेद उचारा । रामदेवसंगभाँवरलेहोंधनिधनिभाग हमारा ॥ सुरतेतीसोंकौतुकआए मुनिजनसहसअठासी ।

कहैंकबीर हम व्याहचलेहैं पुरुष एक अविनासा ॥ ४५ ॥
हमनमरी हैं मरि हैं संसारा हमको मिलाजियावनहारा ॥
टेक ॥ अबनमरों मरनेमनमाना । तेईमुएजिनराम नजाना
॥ १ ॥ साकत मरैं संतजन जीवैं ॥ भरि भरि रामरसायन
पीवैं ॥ २ ॥ हरि मरि हैं तो हमहूं मरि हैं, हरि न मरि हैं
हम काहेको मरि हैं ॥ कहैं कबीर मन मनहिं मिलावा ।
अमर भए सुखसागर पावा ॥

रागधनाश्री ॥ लोका मतिको भोरारे ॥ जो काशी
तनु तजै कबीरा रामहिं कहा निहोरारे ॥ टेक ॥ तब हम
वैसे अबहम ऐसे यहीजन्मका लाहा । ज्योंजलमें जलपै-
सन निकसेयोंढुरि मिला जुलाहा । रामभक्तिपर जाकोहित
चितताको अचरजकाहा । गुरुप्रतापसाधुकी संगत जग
जीतैंजातजुलाहा ॥ कहतकबिर सुनोरे संतोभ्रममेंपरो जनि
कोई । जसकाशीतसमगहाऊसरजों हृदय रामसत होई ॥

गवाहीकेशब्द॥ धर्मदासजीकाशब्द । सतगुरुहंस उबा-
रनजगमें आइयां ॥ प्रगटभएनिजकाशीमेंदासकहाइयां ॥
रामानंद गुरु कीने सो पंथ चलाइयां ॥ बुधि बलदीक्षा
लीनबहुरि समझाइयां । ब्राह्मण औरसंन्यासीहांसीकीन्हा
तजि काशी गए मगहर किनहूंनाचीन्हा । मगहरग्रामगोरख
पुर सतगुरुआइयां ॥ हिंदूतुरक परबोधके पंथ चलाइयां ।
बिजली खान पठानसों कबरखुदाइयां । बीरसिंहबघेला
राणा साज दल आइयां ॥ मगहर झगरा लाए दोऊदल
राखियां ॥ गढबाँधोधर्मदास आपनकरथापियां ॥ अटल

बयालिसबंश राज्यलिख दीन्हा ॥ जस हम तस तुम बंश दयाप्रभुकीन्हा ॥ हदबांधीदरियावउड़िसेजाकर । लक्ष्मी सहित जगन्नाथमिलेप्रभु आयकर ॥ पंडापाखंडनजानके कौतुककीन्हा । एकसे अनंतकलाधारकैदरशनदीन्हा ॥ कहैं कबीर विचार सुन धर्मन नागरा ॥ बहुत हंसले संग उतर भवसागरा ॥

आरती धर्मदासकृत ।

आरतिसाहिब कबीरतुम्हारी । देहु दीदार जाऊं बलि हारी ॥ टेक ॥ पहली आरतीपोहमी आए । काशीप्रगटे दास कहाये ॥ १ ॥ दूसरी आरती देवल थपाए । आसारोप समुद्र हटाए ॥ २ ॥ तीसरी आरती चरणामृत डारे । हरिके पंडे जरत उबारे ॥ ३ ॥ चौथी आरती जल तत्त्व है धाए । तोडे जंजीर तलि आए ॥ पंचम आरती अवगत ध्याए । मुरदासों जिन्दा करल्याए ॥ ५ ॥ छठवीं आरती कान्ह मंडल सिधाए । जनज्ञानीके संशय मिटाये ॥ ६ ॥ सतई आरती बलख सिधाए । लख चौरासीकी बन्द छुटाए ॥ ७ ॥ आठवीं आरती पीर कहाए । मगहर अमी नदी बहाए ॥ ८ ॥ कहँ लग कहूँ शोभा वरणि न जाई । धर्मदास आरती सजपाई ॥ ९ ॥ षट दर्शन औ भेष अलेखा । साहिब कबीर सबहीमें देखा ॥

रत्नबाई कृत स्तोत्र गजली दूसरी ।

जैजैगुरु पीरं सत्य कबीरं अमरशरीरं अधिकारी । निर्गुण निज मूलं धरि अस्थूलं काटन शूलं भव भारी ॥

सुरती निज सोहं कलिमल खोहं इच्छितदोहं छबि भारी॥ अमरपुर बासी सब सुखरासी सदा बिलासी बलिहारी। पीरनको पीरा मतिको धीरा अलख फकीरा ब्रह्मचारी॥ हंसन हितकारी जग पगधारी गर्वप्रहारी उपकारी। काशीमें आए दास कहाए हंस उबारे प्रण-धारी॥ रामानन्द स्वामी अन्तर्यामी हैं बड़े नामी संसारी। उनको गुरु कीन्हा बुध मत लीन्हा उनहुँ न चीन्हा करतारी॥ ब्राह्मण संन्यासी कीन्हा हांसी तब-अविनाशी पगधारी। मगहर अस्थाना किया पयाना बेपरवाना जनतारी॥ तहां बलवीरा तजे शरीरा काटन पीरा भयभारी। विरसिंहदेव राजा सुनबल गाजा सबदल साजा छबिभारी॥ वे तो पीरपठाना सुन बलठाना लायक मानाकर डारी। सन्मुखनियराना छुटे न बाना भए घमसाना रणभारी॥ तब गुरुज्ञानी मनकी जानी अधरेबानी उच्चारी। तुम खोलो परदा है नहिं मुरदा युद्ध वृथाहीं करडारी॥ सुनके यह बानी अचर-जमानी देख निशानी शिरमारी। रोवै परबीना हम मतिहीना तुमहुबचीन्हा करतारी॥ मगहर तजि बासा किया प्रवासा जहां धर्मदासा व्रतधारी। उनको शिष कीन्हा दुख हरलीन्हा शुभपथदीन्हा यमटारी॥ सत्य पंथ चलाए भर्म मिटाए इष्ट दृढाए संसारी। रत्नजन तेरो हमतन हेरो साहिब तुम्हरी बलहारी॥ तीसरा प्रमाण अनंतदास कृत काशीचारित्रमेंसे—काशी

मुक्तकहे सब कोई । मगहर मरे सो गदहा होई ॥ काशी काटे सबके पापू । मैं राखू हरिके परतापू ॥ हिन्दू तुरुकमें परिगइ आटी । तुम जारो तुम दीजो माटी ॥ अजगैबीसो फूलमँगाई । तापै उत्तम सेजबिछाई ॥ सकल संत मिलि नाचैं गावैं ॥ ताल पखावज शंख बजावैं ॥ अमर भए न छूटे शरीरा ॥ गए संदेही सत्य कबीरा ॥ भक्तनमांहि अचंभा भयो । देखि फूल अपने घर गयो ॥

चौथाप्रमाण मलूकदासकृत ।

रागसोरठ ॥ मेरा मन वश कियो साहिब कबीर ॥ २ ॥ ॥ टेक ॥ एक समय गुरु बंसी बजाई कालिंदीके तीर । सुर नर मुनि सब छकित भए हैं छकि यमुनाजल नीर ॥ एक समय गुरु काशीमें प्रगटे ऐसे गुण गम्भीर ॥ तजिकाशी मगहरको गए हैं दोनों दीनकेपीर ॥ कोइ गाडै कोइअग्नि जरावै एक नधरत्ताधीर । चारदागसेन्यारे सतगुरुअजर अमरशरीर ॥ जगन्नाथके मंदिर थापेहट गयोसागरनीर । दास मलूकसलूक कियो हैं खोज्यो साहिब कबीर ॥

पाँचवींगवाही नाभाजीकृत ।

भजन भरोसे आपने, मगहर तज्यो शरीर ।
अविनाशीकी गोदमें, बिलसैं दास कबीर ॥

छठीगवाही दादूजीकृत ।

काशी तज मगहर गये, कबीर भरोसे नाम ।
संदेही साहिब मिले, दादू पूरे काम ॥

सातवींगवाही आदिग्रन्थ साहिबकी ।

सारी उमर तप कियो काशी । अंत भयो मगहरके वासी

काशी मगहर एक समान । सुये कबीरा रमते राम ॥

आठवींगवाही गुसाईं गरीबदासजी कृत ।

गरीब जिन्दा जोगी जगद्गुरु मालिका मुरशद पीर ।

दुहूं दीन झगरा मंड्या पाया नहीं शरीर ॥

अनभए कथी रैदासने मिलगए नीर कबीर ।

मगहर बीच झगरा मंड्या पाया नहीं शरीर ॥

पारषअंगकी साखी ।

२८ ॥ गरीब काया काशी मन मगहर दुहूंके मध्य कबीर ।

काशी तजि मगहर गये पाया नहीं शरीर ॥

७० ॥ गरीब काया काशी मन मगहर दुहुंके बीच मुकाम ।

जहां जुलह दोघर किया आदि अन्त विश्राम ॥

७१ ॥ गरीब चार वर्ण षट आश्रम बिछरे दोनों दीन ।

मुक्त खेतको छाँडिके मगहरमें लवलीन ॥

७४ ॥ गरीब महगर मेला ब्रह्मसों बनारस बनभील ।

ज्ञानी ध्यानी संगचले निन्दा करै कुचील ॥

७५ ॥ गरीब भ्रम भरोसे बूडहीं कलपत हैं दोऊ दीन ॥

सबका सतगुरु कुलधनीमगहरमें लवलीन ॥

७८ ॥ गरीब काशीपुरी कसूर क्या मगहर मुक्तक्योंहोय ।

जुलहा शब्द अतीतथे जात वर्ण नहिं कोय ॥

५४६ चलेकबीरमगहरकेताईं । तहावहांफूलनसेजबिछाईं ।

दोनोंदीनअविक्रपरभाऊ। दोषीदुश्मन औ सब साऊ॥ १४७ तहां बिजली खान चले पठानबीरसिंहबघेलापदपर वान। काशी उमडिचलीमगहरकोकोईनपावैतासुडगरको॥ १५० ॥ तहांकबीरइक भाषा शस्त्र करे सोताहितला- का ॥ शस्त्र करे सो महरा द्रोही। ताकीपैंडपछौडी होही। १५२ सुनु बिजलीखां बात हमारी। हम हैं शब्दरूप निरंकारी॥ बीरसिंह बघेलाविनती करहीं। ये सतगुरु तुम किसविधि मरहीं॥ तहां वहां चद्दर फूल बिछाए। शय्याछाँडी पदहि समाए॥ दो चद्दर दोउ दीन उठाए। ताके मध्य कबीर न पाए॥ ४॥

१५३ ॥ तहां वहां अवगतफूलसतांशी मगहर गोर और चौरा काशी॥ अविगत रूप अलखनिरवानी। तहाँ वहाँ नीरा खी छानी॥

१५४ ॥शंख जुगन जुग जगमें पद पखानहेनपार। गरीबदास कबीर हरि अविगत अपर अपार॥

निश्चयअंगकी साखी।

१४ ॥ काशी तजकर मगहर पहुँचे ऐसा निश्चय कहिये। सतगुरु साख समझले भाई थीर पकर थिररहिये॥
१५ ॥ काशी मरे सो जाय मुक्तको मगहर गदहा होई। पुरुष कबीर चले मगहरको ऐसा निश्चय जोई॥
१७ ॥ काशी तजकर मगहर चले किया कबीर पयान। चद्दर फूल बिछेही छाँडे शब्दे शब्द समान॥

१८ ॥ मगहरमें तो कब्र बनाई बिजली खान पठाना ॥
काशी चौरा उडगन भौंरा दोनों दीन दवाना ॥
६० ॥ गरीब रागरूप सब तन भया सुतार शरीर ।
पथरपटके रैदासने जब सतगुरु मिले कबीर ॥
९९ ॥ जन कहता है गरीब दास छानया हे नीर खीर ॥
कुरबान कुरबान कायम कबीर ॥ १७ ॥

शब्दरेखता ॥ चले जब मगहरको लखे कोई । डगरको चद्दर और फूल अधिक बिछवाई ॥ खडे दुहू दीन तिहूं-लोक शाका भया । शब्दमें शब्द लौलीबथाई ॥

९ ॥ रागमारू ॥ कीना मगहर पयानाहो ॥ दोनों दीन चले संग जाके हिंदू मुसलमाना हो ॥ टेक ॥ मुक्तखे-तको छाँड चले हैं तजकाशी अस्थानाहो । चारवेदके वक्ता संगहैंखोजी बडे बयानाहो ॥ शालग्राम सुरतसों संचैं ज्ञानसमुन्दर दानाहो ॥ षट दर्शनजाके संगचाले गावत वाणी नानाहो ॥ अपना २ इष्टसँभालें बांचै पोथी पानाहो । चद्दरफूल बिछाये सतगुरु देखै सकल जहानाहो ॥ चार दागसों रहत जुलहदी अविगत्त अलख अमानाहो । बीरसिंह बघेला करै विनती बिजलीखान पठानाहो ॥ दो चद्दर बखशीश करी हैं दीना यह परवानाहो ॥ नूर नूर निर्गुण पदमेसा देखभये है रानाहो ॥ पद लौलीन भए अविनाशी पाये पिंड न प्रानाहो ॥ शब्दस्वरूप साहिब सरवंगी शब्दै शब्द समानाहो ॥ दासगरीब कबीर अर्श में फरकें ध्वजा निशानाहो ॥

१० देखया मगहर जहूराहो । काशीमें कीरत कर चालेमिले नूरमें नूराहो ॥ टेक ॥ माया आदि अशोंते उतरी बनी अप्सरा हूराहो ॥ हम तो बरैं कबीर पुरुषको तूंहे दुलहा पूराहो ॥ माया कहे कबीर पुरुषसे देखो वदन जहूराहो ॥ अशीं निदान स्वर्गमें मंदिर भोगें हमको शूरा हो । कहें कबीर सुनो री माया कुटिल नजर तुम धूराहो ॥ जिन भोगी सोई कलरोगी होगये धूस्मधूराहो । माया कहै कबीरपुरुषसे मैंहूं जगसे दूराहो ॥ मैं तुम्हरीपटरानी दासी राखोपलक हुजूराहो ॥ कहें कबीरसुनोरीमाया तुमतो रूह हूराहो । जो तुझे सावे सो बहिजावे तासु अकल भई कूराहो । श्वेत छत्र जहां श्वेत मुकुटहै बाजे अनहद तूरा हो । दास गरीब कहै सुन माया हमसे रहियो दूराहो ॥

रागनिपाली ॥ जालिम जुल्हे जारत लाई ऐसा नाद बजायाहै ॥ टेक ॥ काजीपंडितपकरपछारेतिनकोज्वाबन आयाहै ॥ षट्दर्शनसबखारजीकीनेदोनोंदीनचितायाहै । सुर नर मुनि जन भेद न पावें दुहुंका पीर कहायाहै ॥ शेष महेश गणेश रु थाके जिनको पार न पायाहै॥ २ ॥ नोअवतार रहे सब हारे जुल्हा जदी कहायाहै । चरचा आनिपरी ब्रह्माकी चारोंवेदढहायाहै ॥ ३ ॥ मगहरदेशको किया पयाना दोनोंदीन डराया है । गोरकफनहंस कांढ दीनों चद्दरफूलबिछायाहै ॥ ४ ॥ गैबी मंजिल मारफत

औंडी चादर बीच न पायाहै । काशी वासीहै अविनाशी नादबिंदनाहिं आयाहै ॥ २ ॥ नागडि यानाजारियजुलहा शब्दअतीत समायाहै । चारदागसे रहता सत् गुरु सो मेरे मनभायाहै ॥ ६ ॥ मुक्तलोकके मिले परगने अटल पटा लिखवायाहै । फिर तागीर करे नहीं कोई धुरकाचाकर लायाहै ॥ ७ ॥ सख्त हुजूर चाकर लागे सत्का दाग दगायाहै । सब लोकनमें सेज हमारी अविगत नगर वसा याहै ॥ ८ ॥ चंपा नूर नूर बहु भाँती आन पद्म झलकायाहै धुनबंदी छोड गुसांईं दासगरीब बधायाहै ॥ मगहर जानेके और बहुतसे शब्द हैं परंतु यहां थोडेही लिखेहैं ॥ ४२ ॥

सोरठ—काशीपुरके वासीहो एक काशीपुरके वासी ॥ नाम कबीरा मतिके धीरा जगसो रहत उदासी ॥ टेक ॥ पांच पचीस कियो वश अपने पकड्या मन्न मवासी । माया मान बडाई छाँड्यो मिले राम अविनासी ॥ १ ॥ सुर नर मुनि जन औ योगेश्वर वंछितमरतसंन्यासी । मुक्तिक्षेत्र तज गए मगहरको ऐसे दृढ विश्वासी ॥ २ ॥ अग्नि न जरे धरनि ना गाडे परे न यमकी फाँसी । सन्देही पदमाहिं समाने देख्या फूलसुवासी ॥ हिन्दु तुर्क दुहूँते न्यारा कर्म धर्म कियो नासी । दासगरीब कहै वहां कोई एक पहुँच बाता बहुत वनासी ॥

इति कबीरकसौटी सम्पूर्णा ॥ शुभम् ॥

सतनाम-श्रीकबीर साहिब श्रीनानकजीसे ७१ वर्ष-
उमरमें वडेथे ४९ वर्ष दोनों आचार्योका वर्तमान स-
मय एक रहा २१ वर्ष पछिसे श्रीनानक साहिबका च-
ालवा हुआहै। जो जो बातें श्रीकबीर साहिबके आ-
ारी गायब होनेकी हैं वैसीही श्रीनानक साहिबकी
वतातेहैं। श्रीकबीरजीके ग्रन्थोंकी जिल्द १५२१ के
सालमें बन्द होचुकीहै॥ और श्रीनानकजीकी वाणी-
की जिल्द १६६१ में बन्दरही है ॥ १४२ ॥ वर्षपीछे-
तो २ वाणी श्रीकबीरजीके ग्रंथोंमें हैं उनमेंसे बहुतसी
ाणी श्रीनानकजीके ग्रंथोंमें हैं॥ जो ज्ञानीलोग कह
हैं कि, जो वाणी श्रीआदि ग्रन्थ साहिबमें है वह क-
ीर साहिबकी कथी हुई नहीं है. जो वाणी १४० वर्ष
हले किसी ग्रंथमें है उसको फिर दूसरा कोई अपने
ंथमें लिखले तो क्या वह उसका कथन होसक्ता है.
ाणीसे साफ जाहिरहै कि, यह मतभी वैष्णव है और
ह दोनों एकही मत रखतेहैं ॥ अब जो फरक है सो
ब गिजाकाहै एकके विरुद्ध दूसरा खाताहै मद्य मांस
ाँग तमाखू आदि कहीं भी पान करना नहीं लिखा है ॥

श्रीकबीरजी. संवत.		श्रीनानकजी. संवत.	
शुरू.	अंत.	शुरू.	अंत.
१४५५	१५७५	१५२६	१५९६